दिव्य योजना
की
पातियाँ

अब्दुल-बहा

1993 संस्करण की प्रस्तावना

“दिव्य योजना की पातियाँ” के पिछले संस्करण के बाद के सोलह वर्षों में बहाई अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में महत्वपूर्ण परिवर्तन हो चुका है। विकास के उल्लेखनीय संकेतकों में शामिल हैं विश्व न्याय मन्दिर के ‘सीट’ के निर्माण का कार्य पूरा होना, भारत और समोआ के बहाई उपासना मन्दिरों का निर्माण, एक्वाडोर, पेरू, संयुक्त राष्ट्र, बोलीविया, पनामा और लाइबीरिया में रेडियो स्टेशनों का शुभारम्भ, पूर्वी यूरोप तथा ‘आयरन कर्टेन’ के पतन के बाद के सोवियत संघ में प्रभुधर्म का तेजी से विस्तार तथा बड़े पैमाने पर लोगों का प्रभुधर्म में प्रवेश जिसमें कई देशों में तो हजारों और कई अन्य देशों में सैकड़ों की संख्या में लोगों ने प्रभुधर्म को स्वीकार किया और इस तरह वर्ष 1993 में प्रभुधर्म की विश्वव्यापी सदस्य संख्या कम से कम पचास लाख तक पहुँच गई।

आंतरिक रूप से देखें तो अपने दैनिक जीवन में बहाई शिक्षाओं को क्रियान्वित करने की बहाई समुदाय की क्षमता में काफी विकास हुआ है। बहाई समुदाय निरन्तर बढ़ती हुई सक्रियता के साथ विश्व शांति के विकास, पर्यावरण सम्बन्धी मामलों, साक्षरता, संयुक्त राष्ट्र संघ और इसकी एजेन्सियों तथा सामाजिक-आर्थिक दशाओं को बेहतर बनाने वाली परियोजनाओं में अपनी भागीदारी निभा रहा है। नित्य बढ़ती हुई संख्या में बहाई युवा लम्बी सेवा-अवधियों में प्रतिभागी बने हैं, और बहाई स्कॉलरशिप एक ऐसी शक्ति के रूप में उभरा है जो बहाई शिक्षाओं के प्रति अधिक-से-अधिक समझ विकसित करने में अपना योगदान दे रहा है। ये सब मिलकर यह संकेत दे रहे हैं कि बहाई अपने आसपास की दुनिया में अपनी धार्मिक मान्यताओं को क्रियान्वित करने में और ज्यादा सक्षम हुए हैं।

जैसाकि प्रभुधर्म की विकास-गाथा में सदा से चलता आया है, संकट और विजय का अस्तित्व सदैव इसके साथ रहा है। 1979 में, ईरान में हुई इस्लामी क्रांति के कारण बहाई धर्म का मातृ-समुदाय उत्पीड़न के दावानल से घिर गया। सैकड़ों बहाइयों की हत्या, जिनमें से कई स्थानीय एवं राष्ट्रीय स्तरों पर सेवा के प्रमुख पदों पर कार्यरत थे, शीराज में बाब के घर को नष्ट कर दिया जाना, पवित्र स्थलों, सम्पत्तियों, बैंक खातों और पेन्शन फंड इत्यादि को जब्त कर लिया जाना, अनेक बहाइयों को उनकी नौकरियों से हटा दिया जाना तथा बहाई प्रशासनिक संस्थाओं पर प्रतिबंध लगा दिया जाना - ये सब बहाई समुदाय को नेस्तनाबूद करने के सुनियोजित अभियान के हिस्सा थे। परन्तु पूरी दुनिया के बहाई मित्रों के केन्द्रित प्रयासों से उत्पन्न विश्व-जनमत के दबाव के कारण इस दमन-चक्र में शिथिलता आई, यद्यपि ईरान में बहाई धर्म को गैर-कानूनी

घोषित किया जाना आज भी जारी है और इसके सदस्यों को मूलभूत मानवाधिकार भी प्राप्त नहीं हैं।

वास्तव में, 1979 में बहाई समुदाय को जिस संकट की दशा में धकेल दिया गया उसने उन विजयों को प्राप्त करने की दिशा में आई गतिशीलता को ही संकेतित किया जिसने विकास के विगत पन्द्रह वर्षों को रेखांकित किया है। ईरान के बहाइयों का मामला संयुक्त राष्ट्र, राष्ट्राध्यक्षों, संसदों, मीडिया और जन-समुदाय के बीच उठाने के क्रम में, बहाई लोग संगठन और समर्पण के एक उच्च धरातल पर आ खड़े हुए। अपने साथी धर्मानुयायियों की दशा से अत्यंत द्रवित होकर, उन्होंने अपने प्रयासों का दायरा विस्तृत किया और अपनी ऊर्जाओं को ऐसे कार्यों में लगाया जो ईरान के बहाई समुदाय द्वारा किए गए त्याग के योग्य और अनुरूप था। तदनुसार, बहाई धर्म की विश्वव्यापी पहचान को एक नया आयाम मिला।

यदि व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखें तो विगत सोलह वर्षों में बहाई समुदाय द्वारा जो विजय प्राप्त की गई है उसे अब्दुल-बहा द्वारा प्रकट की गई दिव्य योजना के अगले विकास-क्रम के रूप में देखा जा सकता है। 1916 और 1917 में संयुक्त राज्य एवं कनाडा के बहाइयों के लिए प्रकट किए गए इन महत्वपूर्ण दस्तावेज़ों में बाब द्वारा "पश्चिम के लोगों" को लगाये गए इस गुहार कि वे "अपने नगरों की सीमाओं से बाहर निकलें और उनके धर्म को सहायता पहुंचाएं" तथा भविष्य में अमेरिका द्वारा प्राप्त की जाने वाली भव्य नियति एवं पश्चिम में प्रकट होने वाले "ईश्वरीय साम्राज्य के चिह्नों" के बारे में बहाउल्लाह द्वारा दिए गए संकेतों को प्रकाशित किया गया है। दिव्य योजना की पातियों में अब्दुल-बहा विश्व के आध्यात्मिक पुनर्सृजन की वृहत योजना की एक व्यापक रूपरेखा प्रस्तुत करते हैं और उसके कार्यपालन का दायित्व उत्तरी अमेरिका के बहाइयों के हाथों में सौंपते हैं। वे उनका आह्वान करते हैं कि वे सम्पूर्ण पृथ्वी पर बहाउल्लाह की शिक्षाओं का प्रसार करें और इस प्रकार बहाउल्लाह के प्रकटीकरण से निकली हुई मुक्तिदायिनी शक्तियों को गतिमयता प्रदान करें।

दिव्य योजना को कार्यरूप देने की जिम्मेदारी अब्दुल-बहा के नाती शोगी एफेन्दी के कंधों पर पड़ी जिन्हें अपने "इच्छापत्र और वसीयतनामा" में अब्दुल-बहा ने बहाई धर्म का संरक्षक नियुक्त किया था। शोगी एफेन्दी की संकल्पना में यह दिव्य योजना एक "श्रमसाध्य एवं अत्यंत लम्बी प्रक्रिया" थी जिसके अंतर्गत "प्रभुधर्म के लिए खोले गए सभी नए स्वतंत्र राज्यों, धरती के सभी आश्रित राज्यों एवं द्वीपों तथा विश्व के अन्य सभी शेष प्रदेशों में" बहाई प्रशासनिक व्यवस्था की स्थापना का कार्य निहित था। यह प्रक्रिया 1921 में "उद्भव की अवधि" के साथ आरम्भ हुई जिस दौरान शोगी एफेन्दी ने

सबको बहाई प्रशासन के सिद्धान्तों से परिचित कराया तथा स्थानीय एवं राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं के आरम्भिक प्रारूप की स्थापना की। 1937 में, दिव्य योजना के प्रावधानों को क्रमिक पूर्णता के साथ क्रियान्वित करने के उद्देश्य से बनाई गई योजनाओं की एक श्रृंखला के साथ, उन्होंने औपचारिक रूप से दिव्य योजना का विमोचन किया। यही वह पद्धति है जिसे आज विश्व न्याय मंदिर द्वारा भी अपनाया जा रहा है।

शोगी एफेन्दी की परिकल्पना में दिव्य योजना कई चरणों और कालों में समाहित थी। इसके प्रथम काल का प्रथम चरण उत्तरी अमेरिका के बहाइयों को सौंपी गई सात वर्षीय योजना (1937-44) के साथ प्रारम्भ हुआ। इसके दूसरे चरण में संयुक्त राज्य अमेरिका के बहाइयों द्वारा आत्मार्पित एक दूसरी सात वर्षीय योजना (1946-53) थी तथा विभिन्न अवधियों वाली अन्य योजनाएं जिन्हें पूरा करने का जिम्मा ब्रिटिश द्वीपों; कनाडा, मध्य अमेरिका, दक्षिण अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड, भारत - पाकिस्तान - बर्मा, जर्मनी और ऑस्ट्रिया, ईरान, इराक, मिस्र और सूडान के बहाइयों ने लिया। प्रथम काल का तीसरा और अन्तिम चरण था 'दस वर्षीय धर्म-अभियान' (1953-1963) जिसे पूरी दुनिया के बहाइयों ने समान रूप से मिलकर पूरा किया। दिव्य योजना का दूसरा युगाब्द विश्व न्याय मंदिर के मार्गदर्शन में 1964 में आरम्भ हुआ। इसके अनेक चरणों में शामिल थीं नौ वर्षीय योजना (1964-73), पांच वर्षीय योजना (1974-79), सात वर्षीय योजना (1979-86), छः वर्षीय योजना (1986-92) और तीन वर्षीय योजना (1993-96)।

दिव्य योजना का यह क्रमिक विकास समस्त 'रचनात्मक काल' तथा, जैसाकि शोगी एफेन्दी ने कहा था, "स्वर्णिम युग ......की ओर अग्रसर विस्तृत कालखंड" में होता रहेगा - वह सुनहरा युग जो कि बहाई धर्मयुग का तीसरा और उत्कर्ष युग होगा। यह सुनहरा युग एक ऐसी विश्व-सभ्यता का पल्लवन देखेगा जो परम महान शांति का "प्रतिफल और उसका प्रमुख उद्देश्य" है अर्थात धरती पर ईश्वर के साम्राज्य की संस्थापना, जो कि बहाउल्लाह के प्रकटीकरण का ध्येय है।

अब्दुल-बहा की "दिव्य योजना की पातियाँ" तथा उनका "इच्छापत्र और वसीयतनामा" उन महान विरासतों में से हैं जो वे भावी पीढ़ियों के लिए छोड़ गए हैं। इस प्रकार बहाई पवित्र ग्रंथों में उनका एक प्रमुख स्थान है। इन ग्रंथों के प्रकटीकरण की तिथि जितनी ही बीतती जा रही है, उतने ही आश्चर्य के साथ हम इन दस्तावेज़ों द्वारा इस संसार पर पड़ने वाले रूपांतरकारी प्रभावों को घटित होते देख रहे हैं और नई जिज्ञासा

के साथ उनकी पंक्तियों से उन अनगिनत अर्थों को तलाशने बार-बार लौटते हैं जिनमें विश्व की मुक्ति का रहस्य छिपा है।

-ज्योफ्री डब्ल्यू. मार्क्स

1993 संस्करण के बारे में प्रकाशक की प्रस्तावना

प्रथम विश्वयुद्ध के कारण संयुक्त राष्ट्र और फिलिस्तीन के बीच सम्पर्क-सूत्र टूट जाने से पूर्व, “दिव्य योजना की पातियाँ” में प्रकटित चौदह में से पांच पातियाँ 8 सितंबर 1916 को “स्टार ऑफ दि वेस्ट” में प्रकाशित हो चुकी थीं। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद, अहमद सोहराब द्वारा अनुवाद की गई सभी चौदह पातियाँ न्यूयॉर्क में सम्पन्न बहाई अधिवेशन के दौरान मित्रों के साथ साझा की गईं तथा उस अवसर पर अहमद सोहराब द्वारा दी गई टिप्पणियों के साथ उन्हें एक छोटे से आकार में प्रकाशित किया गया था। उसका शीर्षक रखा गया था ‘दिव्य योजना का प्रकटीकरण’ और उप-शीर्षक के शब्द थे: संयुक्त राज्य एवं कनाडा की सभाओं और बैठकों के प्रति अब्दुल-बहा अब्बास द्वारा प्रकटित पातियाँ, निर्देश एवं व्याख्याएँ।

1936 में बहाई पब्लिशिंग कमेटी ने केवल दिव्य योजना की पातियों का एक छोटा-सा खंड प्रकाशित किया जिसका शीर्षक था “अमेरिका का आध्यात्मिक मिशन”। यह पुस्तक 1948 में पुनःमुद्रित हुई।

1959 में, इन पातियों को पुनः “दिव्य योजना की पातियाँ” के नाम से जारी किया गया जो कि क्रमिक रूप से सात बार पुनःमुद्रित की गई। 1971 के पुनःमुद्रित संस्करण में विश्व न्याय मन्दिर के निवेदन पर प्रार्थनाओं में संशोधन किया गया।

1977 में एक नया संस्करण सामने आया जिसमें पातियों को तिथिवार क्रम से प्रकाशित किया गया और पातियों के बारे में यह जानकारी भी दी गई कि उन्हें कब और कहाँ प्रकाशित किया गया था। पिछले अनुवादों की जगह, अनेक स्थलों पर शोगी एफेन्दी के अनुवाद रखे गए।

1993 का यह संस्करण पॉकेट-साइज में प्रस्तुत पहला संस्करण है जिसका उद्देश्य इस पुस्तक को और अधिक पाठकों तक पहुंचाना है। विश्व न्याय मन्दिर के निवेदन पर, पाठ की परिशुद्धता और नियमितता बनाए रखने के लिए अनेक परिवर्तन किए गए हैं। पुराने अनुवादों की जगह अनेक अनुच्छेदों में शोगी एफेन्दी के अनुवाद रखे गए हैं, एक अनुच्छेद और कुछ शब्दों का फिर से अनुवाद करके त्रुटियों को दूर किया गया है; कुरान और बाइबिल से लिए गए प्रत्यक्ष उद्धरणों और वाक्यांशों को स्पष्ट किया गया है; वाक्यों के चिह्नों, बड़े अक्षरों और छोटे अक्षरों इत्यादि के प्रयोग को नियमित किया गया है, मुद्रण के अनेक दोषों को हटाया गया है; तथा कुरान और बाइबिल के श्लोकों और संदर्भों के लिए फुटनोट्स दिए गए हैं।

दिव्य योजना की पातियों के किसी भी संस्करण के लिए संदर्भ-सुविधा प्रदान करने के लिए, पातियों और उनके अनुच्छेदों के लिए अनुच्छेद-संख्या दी गई है। संख्यांकन की यह प्रणाली 1987 में 'बहाई वरलैग' के "दिव्य योजना की पातियाँ" संस्करण में अपनाई गई प्रणाली के अनुसार है जिसे अब दुनिया भर के प्रकाशकों द्वारा अपना लिया गया है और जिससे किसी भी संस्करण में पाठकों को अनुच्छेदों को खोजने और देखने में सुविधा होती है। पाती संख्या 6 और 8 की अनुच्छेद संख्याओं में "दिव्य योजना की पातियाँ" के जर्मन संस्करण से एक संख्या की भिन्नता पाई जाती है क्योंकि "प्रार्थना", जो कि अब्दुल-बहा के पाठ का ही हिस्सा है, उसे अमेरिकी संस्करण में एक अलग अनुच्छेद संख्या दी गई है।

1977 संस्करण की प्रस्तावना

अपने अनेक पत्रों और “गॉड पासेज बाइ” में शोगी एफेन्दी ने उन परिस्थितियों का मार्मिक विवरण दिया है जिनमें अब्दुल-बहा ने दिव्य योजना की पातियों को प्रकट किया। साथ ही उन्होंने इन पातियों के सतत् उभरते हुए महत्व के बारे में भी गहन अंतर्दृष्टि प्रदान की है जिसे उन्होंने “आदेश” तथा “शिक्षण का सर्वोच्च घोषणा-पत्र” कहकर पुकारा है। शोगी एफेन्दी के लेखों में से ऐसे अनुच्छेदों को पढ़ने से इस बात में कोई संदेह नहीं रह जाता कि दिव्य योजना की पातियाँ अब्दुल-बहा की अमेरिका यात्रा तथा उस महाद्वीप में निवास करने वाले मित्रों से उन्हें प्रेम और स्नेह में बांधे रखने वाली श्रृंखला की अन्तिम कड़ी के प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में प्रकट हुईं। अतः, यह पूर्णतः समुचित और अत्यंत सहायतापूर्ण बात होगी कि “दिव्य योजना की पातियाँ” के इस संस्करण की प्रस्तावना प्रिय धर्मसंरक्षक के ही इन शब्दों से शुरू की जाए:

अब्दुल-बहा के अथक कार्यकलापों ने प्रचुरता से जिन बीजों को बिखेरने का काम किया उससे संयुक्त राज्य और कनाडा ही नहीं बल्कि समस्त प्रायद्वीप अभूतपूर्व क्षमताओं से सम्पन्न हो उठा। उस यात्रा के माध्यम से अपने प्रिय और प्रशिक्षित अनुयायियों के एक छोटे-से समूह को वे एक ऐसी अमूल्य विरासत सौंप कर गए जिसके साथ एक पवित्र और प्राथमिक कर्त्तव्य जुड़ा हुआ था - अब्दुल-बहा द्वारा अपार गरिमा के साथ आरम्भ किए गए कार्य को उर्वर भूमि तक ले जाना। उस होनहार देश को अलविदा कहते समय उनके उत्सुक हृदय में जो अभिलाषाएँ उत्पन्न हुई होंगी, अपने मन में हम उनकी सिर्फ एक धूमिल छवि ही देख सकते हैं। अपने प्रस्थान के समय उन्होंने अपने शिष्यों से जो बात कही थी हम उसकी कल्पना जरूर कर सकते हैं कि ‘एक अकाट्य विवेक ने अपनी असीम कृपा से आपके देश को एक महान उद्देश्य की पूर्णाहुति के लिए चुना है।’ बहाउल्लाह की संविदा रूपी एजेन्सी के माध्यम से, एक हलवाहे के रूप में मुझे अपने नेतृत्वकाल के आरम्भ से ही यह जमीन जोतकर तैयार कर देने का आह्वान सुनाया गया है। आपके कार्य-व्यवसाय के आरम्भिक दिनों में जो अपार दिव्य सम्पुष्टियाँ प्राप्त हुई हैं उन्होंने इसकी मिट्टी को तैयार और शक्ति-सम्बलित किया है। उसके बाद आपको जो यातनाएँ भोगनी पड़ीं उन्होंने उस खेत में गहरी लकीरें बनाई हैं जिन्हें मेरे हाथों ने तैयार किया था। मुझे जो बीज बिखेरने को दिए गए थे उन्हें मैंने आपके समक्ष दूर-दूर तक बिखेर दिया है। आपकी स्नेहपूर्ण देखभाल, आपके अथक प्रयासों के माध्यम से, इनमें से प्रत्येक बीज अवश्य अंकुरित होगा और इनमें से प्रत्येक अपना नियत फल प्रदान करेगा। एक अत्यंत दारुण शीत शीघ्र ही आपको अपनी चपेट में लेगी। इसके बवंडर भरे बादल क्षितिज पर तेजी से घुमड़ रहे हैं। तूफान भरी आंधियाँ शीघ्र ही चारों ओर से आप पर टूट पड़ेंगी। मेरे जाने के बाद संविदा का प्रकाश छिप जाएगा परन्तु ये शक्तिशाली विस्फोट, यह ठिठुरन भरी निराशा एक दिन गुजर जाएगी। सोया हुआ

बीज एक ताजी क्रियाशीलता से फूट उठेगा। इसके अंकुर फूटेंगे, शक्तिशाली संस्थाओं के रूप में इसकी फूल-पत्तियाँ प्रकट होंगी। मेरे स्वर्गिक पिता द्वारा आप पर जिन मृदुल कृपाओं की बासन्ती वर्षा की जाएगी उससे यह सुकोमल पौधा आपके मातृ-प्रदेश से भी दूर दिगन्त तक अपनी शाखा-प्रशाखाओं का विस्तार करेगा। और अंत में, उसके प्राकट्य का सतत् प्रखर होता हुआ सूर्य, अपनी चरम आभा के साथ दीप्तिमान होते हुए, अपने धर्म के इस शक्तिशाली तरुवर को समय आने पर और आपकी धरती पर, अपना सुनहरा फल प्रस्फुटित करने में सक्षम बनाएगा।

अलविदा के इस संदेश का असर अब्दुल-बहा के आरम्भिक अनुयायियों पर शीघ्र ही पड़ा। अमेरिकी और यूरोपीय प्रायद्वीपों में जैसे ही उन्होंने अपनी कठिन और लम्बी यात्रा समाप्त की, वैसे ही उन जोरदार घटनाओं का घटित होना प्रारम्भ हो गया जिनकी ओर उन्होंने संकेत किया था। उन्होंने जिस संघर्ष की भविष्यवाणी की थी उसने कुछ समय के लिए उन लोगों के साथ संवाद और सम्पर्क के सभी साधनों को छिन्न-भिन्न करके रख दिया जिनके कंधों पर वे ऐसी विश्वासपूर्ण जिम्मेदारी रखने आए थे और जिनसे वे बदले में इतनी उम्मीद करके चले थे। अपनी समस्त उथल-पुथल और रक्तपात के साथ, यह ठिठुरन भरी निराशा चार सालों तक अपना असर दिखाती रही। इस बीच अब्दुल-बहा ने बहाउल्लाह की पवित्र समाधि के निकट अपने निवास के शांत एकाकीपन में रहते हुए उन लोगों के साथ अपने विचारों का संप्रेषण जारी रखा जिन्हें वे अलविदा कहकर आए थे और जिन्हें उन्होंने अपनी कृपा के विलक्षण प्रतीकों का पात्र बनाया था। अपने परमप्रिय मित्रों के साथ वार्तालाप की इन लम्बी अवधियों में उन्होंने अपने हृदय की प्रेरणा से जिन अमर पातियों को प्रकट किया था उनमें उन्होंने उनके नेत्रों के समक्ष उनकी आध्यात्मिक नियति की अपनी संकल्पना स्पष्ट की थी और वे जिनसे इस मिशन को पूरा करने की आकांक्षा रखते थे उसकी योजना का खाका प्रस्तुत किया। अपने हाथों से उन्होंने जो बीज बोए थे, अब वे उसी सावधानी, स्नेह और धैर्य के साथ उन्हें सींचने के कार्य में जुटे थे जिस सावधानी, स्नेह और धैर्य से उन्होंने तब परिश्रम किया था जब वे उन मित्रों के बीच थे।

'गॉड पासेज बाइ' में शोगी एफेन्दी हमें बताते हैं कि विश्वयुद्ध के दौरान अब्दुल-बहा ने बड़ी कुशाग्रता के साथ यह महसूस किया कि दुनिया के ज्यादातर बहाई केन्द्रों से हर प्रकार का सम्पर्क बंद हो जाएगा। उन्होंने जो आह्वान सुनाया था या जो चेतावनियां दी थीं उनका प्रत्युत्तर देने में मानवजाति की विफलता के कारण जिस भीषण नरसंहार का दृश्य उपस्थित हुआ था उसे देखकर उनकी आत्मा व्यथित हो उठी थी। अपने लड़कपन से ही उन्होंने अपने पिता के धर्म के निमित्त और उसकी सेवा के पथ पर संकटों और चक्रव्यूहों के जो अगणित आघात झेले थे उन पर विपदाओं का एक नया अम्बार आ लगा था।

फिर भी त्रासदी के इन दिनों में, जिसके अंधकार की कालिमा अक्का के किले में उनके कारावास के सबसे जोखिम भरे दिनों में झेली गई यातनाओं की याद दिला रही थी, अपने पिता की समाधि के परिसर अथवा अक्का के अपने घर में निवास करते हुए या फिर माउंट कार्मेल पर बाब की समाधि के साये में रहते हुए, अब्दुल-बहा एक बार फिर अपने जीवन में आखिरी बार अपने अमेरिकी धर्मानुयायियों पर अपनी विशेष कृपा का अनूठा चिह्न प्रदान करने के लिए उद्यत हुए - इस पार्थिव संसार में अपने नेतृत्व-काल के अवसान के समय दिव्य योजना की पातियों को प्रकट करके उनके ऊपर एक विश्वव्यापी जिम्मेवारी सौंपते हुए। एक चैथाई शताब्दी के समापन के बाद भी, आज भी दिव्य योजना की पातियों का सम्पूर्ण अभिप्राय प्रकट नहीं हो पाया है और यद्यपि इसका क्रियान्वयन अभी आरम्भिक अवस्था में ही है फिर भी उसने प्रथम बहाई शताब्दी के आध्यात्मिक एवं प्रशासनिक इतिहास को इतनी अपार समृद्धि प्रदान की है।

इनमें से प्रथम आठ पातियाँ 26 मार्च से लेकर 22 अप्रैल 1916 के मध्य लिखी गई थीं। इतिहास के पन्नों में यह कालखंड यूरोप में एक अत्यंत रक्तरंजित कालखंड के रूप में वर्णित है। एक प्राचीन विश्व-व्यवस्था के कोलाहल और ध्वंस के बीच, इस धरती की मुक्ति के लिए एक दिव्य कार्ययोजना तैयार करने के बारे में विचार करना सचमुच बड़ा अद्भुत प्रतीत होता है। अब्दुल-बहा की रूपांतरकारी संकल्पना हमारे सामने इस धरती पर आध्यात्मिक विजय की योजनाएँ प्रस्तुत करती है। अन्तिम छः पातियाँ 2 फरवरी और 8 मार्च 1917 के दरम्यान प्रकट की गई थीं, यानी संयुक्त राज्य द्वारा विश्वयुद्ध में शामिल होने के बमुश्किल एक महीने पहले। पहली पातियों के समूह में से, पाँच पातियाँ वस्तुतः अमेरिका पहुँच चुकी थीं और 8 सितंबर 1916 के ‘स्टार ऑफ दि वेस्ट’ के अंक में छप चुकी थीं। उसके बाद पवित्र भूमि से सारे सम्पर्क बंद हो गए और बाकी पातियाँ पूरे विश्वयुद्ध के दौरान कार्मेल पर्वत पर बाब की समाधि के नीचे एक मंजूषा में रखी हुई थीं। युद्ध समाप्त होने पर उन्हें अमेरिका भेजा गया जहाँ 26-30 अप्रैल 1919 को न्यूयॉर्क के होटल मैकऑलपिन में आयोजित “संविदा अधिवेशन” के दौरान सम्पन्न समुचित समारोहों के दौरान उन्हें प्रमोचित किया गया।

हालाँकि दि डन्स एवं मार्था रूट जैसे कुछ आदर्श व्यक्तियों ने अब्दुल-बहा के इस आह्वान का तुरन्त प्रत्युत्तर दिया था कि “आत्माएँ जो कि इस अंधकारमय संसार को प्रकाशित करेंगी और इस मृतप्राय संसार में जीवन का संचार करेंगी”, किन्तु दिव्य योजना का पूर्ण कार्यान्वयन 1937 में आरम्भ हुआ जब शोगी एफेन्दी ने उत्तरी अमेरिकी बहाई समुदाय को प्रथम सात वर्षीय योजना का मिशन पूरा करने का दायित्व सौंपा - वह योजना जो “उस उपक्रम का प्रथम चरण थी जो लगभग बीस वर्षों

तक लम्बित पड़ा रहा था और जिस दौरान प्रभुधर्म की प्रशासनिक संस्थाएँ धीरे-धीरे आकार ग्रहण कर रही थीं और पूर्णता की ओर अग्रसर थीं।”

पश्चिमी गोलार्द्ध पर प्राप्त आध्यात्मिक विजय - जिसकी पूर्णाहुति हमारे धर्म के उद्भव के शताब्दी वर्ष यानी 1944 में हुई - उस प्रथम सात वर्षीय योजना का एकमात्र प्रतिफल नहीं थी। उसने उस सुनियोजित प्रक्रिया का एक कामचलाऊ प्रादर्श (मॉडेल) प्रस्तुत किया जिसके माध्यम से प्रिय धर्मसंरक्षक मास्टर (अब्दुल-बहा) की संकल्पना की दिशा में बहाई जगत का मार्गदर्शन कर रहे थे। पायनियरिंग की क्षेत्रीय योजनाएँ पूर्वी देशों के मित्रों को दूसरे विश्वयुद्ध की समाप्ति से पहले ही सौंपी जा चुकी थीं।

1946-53 के दौरान दूसरी सात वर्षीय योजना ने उत्तरी अमेरिका के पराक्रमी बहाई समुदाय को यूरोप के आध्यात्मिक पुनःसशक्तीकरण का दायित्व सौंपा जो कि एक बार फिर युद्ध की विभीषिका और विध्वंस से तबाह हो चुका था।

अब्दुल-बहा की दिव्य योजना के क्रमिक प्रकटीकरण के भव्य चरण का सूत्रपात 1953 में, एक ईश्वरीय अवतार के रूप में तेहरान के सियाहचाल में बहाउल्लाह के प्रकटीकरण के शताब्दी वर्ष के अवसर पर, प्रिय धर्मसंरक्षक द्वारा ‘दस वर्षीय धर्म-अभियान’ के रूप में किया गया। हालाँकि 1953 से पहले ही अनेक राष्ट्रीय बहाई समुदाय अपनी-अपनी पायनियरिंग योजना आरम्भ कर चुके थे, लेकिन अब पहली बार, एक शक्तिशाली धर्म-अभियान को एकसूत्रता में पिरोकर, सम्पूर्ण धरती पर बहाउल्लाह के धर्म की ध्वजा फहराते हुए, पूरे बहाई विश्व को प्रिय मास्टर की योजना में अपना योगदान करने का अवसर दिया गया।

विश्व न्याय मन्दिर की नौ वर्षीय योजना (1964-73) और पांच वर्षीय योजना (1974-79) को दिव्य योजना की पातियों में किए गए आह्वान के उत्तर में बहाउल्लाह की सेना के अदम्य एवं विजयी अभियान के क्रमिक चरणों के रूप में देखा जा सकता है।* इन सभी महत्वपूर्ण उपलब्धियों के दौरान और आने वाले कालों में, इन पातियों के साथ संलग्न उत्प्रेरक प्रार्थनाओं में मुखरित प्रिय मास्टर का स्नेहिल स्वर सदैव हमारी प्रेरणा और संपुष्टि का स्रोत बना रहेगा।

* सात वर्षीय योजना (1979-86), छः वर्षीय योजना (1986-92) और तीन वर्षीय योजना (1993-96) और बाद की योजनाओं के माध्यम से यह प्रक्रिया अभी भी जारी है।

-सम्पादक

1. उत्तर पूर्वी राज्यों के बहाइयों के नाम पाती

26 मार्च 1916 को बहजी स्थित भवन में अब्दुल-बहा के कक्ष में प्रकटित। संयुक्त राज्य के नौ उत्तर-पूर्वी राज्यों - मैने, मैसाच्युसेट्स, न्यू हैम्पशायर, रोड आइलैंड, कनेक्टिकट, वरमौंट, पेन्सिल्वेनिया, न्यू जर्सी और न्यूयॉर्क - के बहाइयों को सम्बोधित।

1. हे स्वर्गिक अग्रदूतों!

2. ये नौरूज के दिवस हैं। मेरे मन में सदा उन दयालु मित्रों का विचार चल रहा है! मैं आपमें से प्रत्येक और सबके लिए एकमेवता की दहलीज से सम्पुष्टि और सहायता की याचना करता हूँ, ताकि अमेरिकी गणराज्यों में आयोजित वे सम्मिलन मोमबत्तियों की तरह प्रज्ज्वलित हो उठें और सभी हृदयों में ईश्वरीय प्रेम का प्रकाश प्रदीप्त कर सकें। इस प्रकार स्वर्गिक शिक्षाओं की किरणें प्रस्फुटित हों और परम महान मार्गदर्शन के अनन्त, असीम नक्षत्रों से अमेरिकी राज्यों को अपनी जगमगाहट से भर दें।

3. अटलांटिक के तटों पर स्थित उत्तर-पूर्वी राज्य - मैने, मैसाच्युसेट्स, न्यू हैम्पशायर, रोड आइलैंड, कनेक्टिकट, वरमौंट, पेन्सिल्वेनिया, न्यू जर्सी और न्यूयॉर्क - इनमें से कुछ राज्यों में बहाई धर्मानुयायी हैं किन्तु इन राज्यों के कुछ शहरों में अभी तक लोगों के पास प्रभु-साम्राज्य का प्रकाश नहीं पहुँचा है और वे स्वर्गिक शिक्षाओं से अनभिज्ञ हैं। अतः, आपमें से प्रत्येक के लिए जब कभी सम्भव हो, आप इन शहरों की ओर तेजी से बढ़ें और परम महान मार्गदर्शन के प्रकाश से प्रदीप्त सितारों की तरह जगमगाएँ। महिमाशाली कुरान में ईश्वर ने कहा है: “मिट्टी काली और बंजर थी फिर हमने उसे वर्षा की फुहारों से अभिसिंचित किया और तुरन्त ही वह मिट्टी हरी-भरी हो उठी और हर तरह के पेड़-पौधे प्रचुरता से लहलहा उठे।“[1] दूसरे शब्दों में, यह कहा गया है कि धरती काली है लेकिन जब उस पर बसन्त की फुहारें पड़ती हैं तो काली मिट्टी स्फूर्ति से भर जाती है और तरह-तरह के फूल खिल उठते हैं। इसका यह अर्थ है कि प्रकृति-संसार के मानवों के हृदय मिट्टी की तरह कालिमामय हैं, लेकिन जब दिव्य फुहारों की वर्षा होती है और प्रकाश की कांति बिखरती है तो उन हृदयों को एक नया जीवन मिलता है, वे प्रकृति के अंधकार से मुक्त हो उठते हैं और दिव्य रहस्यों के फूल खिल उठते हैं। अतः, मनुष्य को चाहिए कि वह मानव-जगत को प्रकाशित करने का निमित्त बने और दिव्य प्रेरणा से पवित्र ग्रंथों में प्रकटित पवित्र शिक्षाओं का प्रसार करे।

आशीर्वादित 'ईशवाणी' (गॉस्पेल) में कहा गया है: "तुम पूर्व और पश्चिम की ओर यात्राएँ करो और परम महान मार्गदर्शन के प्रकाश से लोगों को आलोकित करो ताकि वे अनन्त जीवन का अंशदान ग्रहण कर सकें।"[2] ईश्वर का धन्यवाद हो कि उत्तर-पूर्वी राज्यों के पास अपार क्षमता है। चूँकि धरती उपजाऊ है इसलिए दिव्य कृपाओं की वर्षा बरस रही है। अब आपका कर्त्तव्य यह है कि आप स्वर्गिक किसान बन जाएँ और तैयार भूमि में विशुद्ध बीज डालें। हर बीज की फसल सीमित होती है लेकिन आने वाली सदियों और युगचक्रों में अनेक फसलों का संग्रह किया जा सकेगा। पिछली पीढ़ियों के कार्यों पर विचार करें। ईसा मसीह के जीवन काल में दृढ़ व धर्मानुयायी आत्माओं की संख्या बहुत ही कम थी लेकिन दिव्यकृपाओं की बरसात इतनी बहुलता से हुई कि कुछ वर्षों में असंख्य आत्माएँ 'ईशवाणी' की छाया तले एकत्रित हो गईं। ईश्वर ने कुरान में कहा है: "एक दाना सात गट्ठरों को जन्म देगा और हर गट्ठर में सैकड़ों दाने होंगे।"[3] दूसरे शब्दों में कहें तो एक दाने से सात सौ दाने हो जाएंगे और यदि ईश्वर ने चाहा तो यह संख्या दोगुनी भी हो सकती है। ऐसा अक्सर हुआ है जबकि एक आशीर्वादित आत्मा सम्पूर्ण राष्ट्र के मार्गदर्शन का कारण बनी है। हमें अपनी योग्यता और क्षमता पर विचार नहीं करना है बल्कि इस युग में हमें अपनी दृष्टि ईश्वर की कृपाओं और उदारताओं पर केन्द्रित करनी चाहिए जिसने एक बूंद को महासागर और एक कण को सूर्य बना डाला है।

अभिवादन और प्रशस्ति हो आपकी!

2. दक्षिणी राज्यों के बहाइयों के नाम पाती

27 मार्च 1916 को बहाउल्लाह की समाधि के निकट स्थित उद्यान में प्रकटित। संयुक्त राज्य के सोलह दक्षिणी राज्यों - डेलावेयर, मेरीलैंड, वर्जीनिया, वेस्ट वर्जीनिया, नॉर्थ कैरोलिना, साउथ कैरोलिना, जॉर्जिया, फ्लोरिडा, अलाबामा, मिसिसिपी, टेनेसी, केन्टुकी, लुसिआना, आर्कांसस, ओक्लाहामा और टेक्सास - के बहाइयों को सम्बोधित।

1. हे ईश्वर के साम्राज्य के अग्रदूतों!

2. कुछ दिनों पहले उन दिव्य धर्मानुयायियों को एक पाती लिखी गई थी परन्तु चूंकि ये नौरूज़ के दिन हैं, मेरे मन में आपका स्मरण हो आया और इस महिमाशाली सहभोज के लिए मैं यह शुभकामना आपके पास भेज रहा हूँ। यद्यपि सभी दिन आशीर्वादित होते हैं किन्तु यह सहभोज तो फारस का राष्ट्रीय उत्सव है। फारस के लोग हजारों वर्षों से इसे मनाते आ रहे हैं। सच्चाई तो यह है वह हर दिन जो मनुष्य ईश्वर के सुमिरन में बिताता है, परमात्मा की सुरभि के प्रसार और प्रभु-साम्राज्य की ओर लोगों का आह्वान करने में लगाता है, वह दिन उत्सव का दिन है। ईश्वर का गुणगान हो कि आप लोग प्रभु-साम्राज्य की सेवा में निरत हैं और रात-दिन परमात्मा के धर्म के प्रसार में जुटे हुए हैं। अतः आपके तो सभी दिन उत्सव के दिन हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि ईश्वर की सहायता और कृपा आपको अवश्य प्राप्त होगी।

3. संयुक्त राज्य (युनाइटेड स्टेट्स) के दक्षिणी राज्यों में मित्रों की संख्या नगण्य है - डेलावेयर में, मेरीलैंड, वर्जीनिया, वेस्ट वर्जीनिया, नॉर्थ कैरोलिना, साउथ कैरोलिना, जॉर्जिया, फ्लोरिडा, अलाबामा, मिसिसिपी, टेनेसी, केन्टुकी, लुसिआना, आर्कांसस, ओक्लाहामा और टेक्सास में। अतः, इन राज्यों में आपको स्वयं जाना चाहिए अथवा अनेक आशीर्वादित आत्माओं को वहाँ भेजना चाहिए, ताकि वे लोगों को स्वर्गिक साम्राज्य की ओर मार्गदर्शित कर सकें। ईश्वर के पवित्र 'प्रकटावतारों' में से एक ने किसी धर्मानुयायी को सम्बोधित करते हुए कहा था कि यदि कोई व्यक्ति किसी एक व्यक्ति को भी प्रकाशित करने का कारण बन सका तो यह अनन्त खजानों से भी श्रेयस्कर है। "हे अली! यदि ईश्वर तुम्हारे माध्यम से एक भी आत्मा को राह दिखा सके तो यह सभी सम्पदाओं से बढ़कर है।'' और वे पुनः कहते हैं: "हमें सीधे मार्ग की राह दिखाओ!"[4] यानि हमें सच्चा मार्ग बताओ।

“ईशवाणी” (गॉस्पेल) में भी इस बात का उल्लेख हैः तुम दुनिया के सभी भागों में यात्रा करो और परमात्मा के साम्राज्य के आविर्भाव का शुभ समाचार सुनाओ।”[5]

4. संक्षेप में, मुझे आशा है कि आप इस विषय में भरपूर प्रयास और उदारता का परिचय देंगे। यह बात पक्की है कि आपको सहायता और सम्पुष्टि प्राप्त होगी। जो व्यक्ति प्रभु-साम्राज्य के यथार्थ और उसके महत्व के अवतरण के शुभ समाचार की घोषणा करता है वह उस किसान की तरह है जो उर्वर धरती में अच्छे बीजों को बिखेरता है। बासन्ती मेघ उन पर उदार कृपाओं की वर्षा करेंगे, और इसमें कोई संदेह नहीं कि ग्राम-प्रमुख की दृष्टि में उस किसान का दर्ज़ा ऊँचा उठेगा और अनगिनत फसलें काटी जा सकेंगी।

5. अतः, हे प्रभु के मित्रों! आप इस समय का महत्व पहचानें और बीजों को बोने के काम में जुट जाएँ ताकि आप स्वर्गिक आशीर्वाद और ईश्वरीय कृपा पा सकें। आप पर बहा का प्रकाश विराजे!

3. मध्यवर्ती राज्यों के बहाइयों के नाम पाती

29 मार्च 1916 को बहजी स्थित भवन के बाहरी हिस्से में प्रकटित। संयुक्त राज्य के बारह मध्यवर्ती राज्यों - मिशिगन, विस्कौंसिन, इलिनॉयस, इंडियाना, ओहियो, मिन्नेसोटा, आइओवा, मिसौरी, नॉर्थ डैकोटा, नेब्रास्का और कैन्सास - के बहाइयों को सम्बोधित।

1. हे स्वर्गिक आत्माओं, हे आध्यात्मिक सभाओं, हे ईश्वरीय सम्मिलनों!

2. पिछले कुछ समय से पत्राचार में विलम्ब हुआ है और ऐसा पत्र भेजने और प्राप्त करने में मुश्किलों के कारण हुआ है। किन्तु चूँकि मौजूदा समय में कई सुविधाएँ उपलब्ध हैं, अतः मैं आपको यह संक्षिप्त पत्र लिखने बैठा हूँ ताकि मेरा हृदय और मेरी आत्मा मित्रों के स्मरण से प्रफुल्लित और सुवासित हो सके। यह यायावर (घूमते रहने वाला व्यक्ति) निरन्तर उस एकमेव पावन परमात्मा की दहलीज पर प्रार्थना करता रहता है और प्रभु के अनुयायियों की ओर से सहायता, कृपा और दिव्य सम्पुष्टि की याचना करता है। आपका विचार सदा मेरे मन में रहता है। आपको मैंने न भुलाया है और न ही भुलाऊँगा। मुझे आशा है कि उस परम पावन सर्वशक्तिमान परमेश्वर की कृपा से आपकी निष्ठा, आश्वस्ति, दृढ़ता और अडिगता बढ़ती रहेगी और आप ईश्वरीय सुरभि के और अधिक प्रसार के माध्यम बनेंगे।

3. ईश्वर का गुणगान हो कि हालाँकि इलिनॉयस, विस्कौंसिन, ओहियो, मिशिगन और मिन्नेसोटा राज्यों में ऐसे धर्मानुयायी मौजूद हैं जो अत्यंत दृढ़ता और स्थिरता के साथ एक-दूसरे के साथ सहयोग कर रहे हैं, दिन-रात ईश्वरीय सुरभि के प्रसार के सिवा उनका और कोई उद्देश्य नहीं है, स्वर्गिक शिक्षाओं को आगे बढ़ाने के अलावा उनकी और कोई आशा नहीं है, एक मोमबत्ती की तरह वे ईश्वर के प्रेम के प्रकाश से प्रदीप्त हैं और कृतज्ञता से भरे पंछियों की तरह वे अपने गायन में व्यस्त हैं - ईश्वर के ज्ञान की गुलाब-वाटिका में चेतना का संचार करते हुए, आनन्द भरते हुए। किन्तु इंडियाना, आइओवा, मिसौरी, नॉर्थ डैकोटा, साउथ डैकोटा, नेब्रास्का और कैन्सास में बहुत थोड़े से अनुयायी हैं। अभी तक इन राज्यों में प्रभु-साम्राज्य के आह्वान और मानव-जगत की एकता की घोषणा का कार्य सुव्यवस्थित और उत्साहपूर्ण तरीके से नहीं किया जा सका है। आशीर्वादित आत्माओं और प्रभुधर्म के अनासक्त संदेशवाहकों ने अभी तक इन क्षेत्रों की बारम्बार यात्राएँ नहीं की हैं। अतः ये राज्य अभी भी उपेक्षित हैं। ईश्वर के सखाओं के प्रयास से इन राज्यों में भी लोगों की आत्माओं को ईश्वर के प्रेम की अग्नि से प्रदीप्त किया जाना चाहिए और उन्हें ईश्वर के साम्राज्य की ओर आकर्षित किया जाना चाहिए ताकि वे लोग भी

प्रकाशित हो सकें और आत्मा को प्रफुल्लित करने वाली प्रभु-साम्राज्य की गुलाब-वाटिका की बयारें वहाँ के निवासियों के नासिका-रंध्रों को सुवास से भर सकें। अतः, यदि सम्भव हो तो उन क्षेत्रों में ऐसे संदेशवाहकों को भेजें जो ईश्वर के सिवा अन्य सबसे अनासक्त हों, पवित्र और पावन हों। यदि ये संदेशवाहक अत्यंत सक्षम चुम्बक बनेंगे तो कुछ ही समय में बड़े परिणाम देखने को मिलेंगे। प्रभु-साम्राज्य के पुत्रों और पुत्रियों की तुलना वास्तविक किसानों से की जा सकती है। वे जिस किसी गाँव या प्रान्त से गुजरते हैं, आत्मत्याग की भावना झलकाते हैं और दिव्य बीज बोते हैं। उस बीज से फसलें उगती हैं। इस संदर्भ में महिमामयी 'ईशवाणी' (गॉस्पेल) में कहा गया है: "जब विशुद्ध बीजों को उर्वर धरती पर बिखेरा जाता है तो स्वर्गिक आशीर्वाद और कृपाएँ प्राप्त होती हैं।"[6] मेरी आशा है कि आपको दिव्य सहायता और सम्पुष्टि प्राप्त हो और आप दिव्य शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार में कभी अपना हौसला नहीं खोएँ। दिन-प्रतिदिन आपके प्रयास, परिश्रम और उदारता बढ़ते रहें!

4. अभिवादन और प्रशस्ति हो आपकी!

4. पश्चिमी राज्यों के बहाइयों के नाम पाती

1 अप्रैल 1916 को बहजी स्थित भवन में अब्दुल-बहा के कक्ष में प्रकटित। संयुक्त राज्य के ग्यारह पश्चिमी राज्यों - न्यू मैक्सिको, कोलेरैडो, अरिज़ोना, नेवाडा, कैलिफोर्निया, योमिंग, ऊटाह, मौंटाना, इडैहो, ओरेगॉन और वाशिंगटन - के बहाइयों को सम्बोधित।

1. वह परमेश्वर है! हे ईश्वरीय साम्राज्य के पुत्रों और पुत्रियों!

2. मित्रों के स्मरण, उनकी ओर से अपने हृदय की गहराइयों से प्रार्थना करने, ईश्वरीय साम्राज्य से उनके लिए सम्पुष्टि की याचना करने और पवित्र चेतना की साँसों के प्रत्यक्ष प्रभाव की प्रार्थना करने के सिवा रात-दिन मेरा और कोई काम नहीं। मुझे आशा है कि दिव्य अनुदान देने वाले उस महामहिम परमात्मा की कृपाओं से ईश्वर के सखा ऐसे समय में मानव-जगत के हृदयों को प्रकाशित करने के माध्यम बन सकेंगे, चेतनाओं पर जीवन की साँस फूँक सकेंगे - जिसके सराहनीय परिणाम अनन्तकाल तक मानवजाति की गरिमा और उसकी उन्नत्ति का पथ प्रशस्त करेंगे। हालाँकि कुछ पश्चिमी राज्यों - जैसे कैलिफोर्निया, ओरेगॉन, वाशिंगटन और कोलेरैडो - में पावनता की सुरभि प्रवाहित कर दी गई है, असंख्य आत्माओं ने अनन्त जीवन के निर्झर से अपना अंशभाग ग्रहण किया है, उन्हें स्वर्गिक कृपाएँ प्राप्त हुई हैं, उन्होंने ईश्वर-प्रेम से लबालब भरे प्याले का आस्वादन किया है और परमोच्च दरबार की मधुर ध्वनि पर अपना ध्यान लगाया है - परन्तु न्यू मैक्सिको, मौंटाना, इडैहो, ऊटाह, अरिज़ोना और नेवाडा जैसे राज्यों में ईश्वरीय प्रेम के प्रदीप को अभी भी समुचित रूप से प्रज्वलित नहीं किया जा सका है और ईश्वरीय साम्राज्य का आह्वान नहीं गुँजाया गया है। यदि सम्भव हो तो अब आप इस दिशा में प्रयास करें। या तो आप स्वयं व्यक्तिगत रूप से इन राज्यों की यात्रा करें या अन्य व्यक्तियों का चयन करके उन्हें वहाँ भेजें ताकि वे लोगों को प्रभुधर्म का संदेश दे सकें। वर्तमान समय में वे राज्य मृत शरीर की तरह हैं: उन्हें उनमें जीवन की साँस फूँकनी होगी और उनमें दिव्य चेतना का संचार करना होगा। सितारों की तरह, उन्हें उस क्षितिज पर जगमगाना होगा और इस प्रकार सत्य के सूर्य की किरणें उन राज्यों पर अपना प्रकाश बिखेर सकेंगी।

3. महान ग्रंथ कुरान में मुहम्मद साहब ने कहा है: "वस्तुतः, ईश्वर उन सबका सहायक है जिन्होंने आस्था रखी है। वह उन्हें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाएगा।"[7] इसका अर्थ यह है कि ईश्वर आस्थावानों से प्यार करता है। अतः वह उन्हें अंधकार से उबारेगा और उन्हें प्रकाश की दुनिया की ओर मार्गदर्शित करेगा।

4. आशीर्वादित 'ईशवाणी' (गॉस्पेल) में भी यह लिखा है: "तुम दुनिया के सभी भागों में यात्रा करो और परमात्मा के साम्राज्य के आविर्भाव का शुभ समाचार सुनाओ।"[8] अभी ही वह समय है जबकि आप इस महान सेवा-कार्य के लिए उठ खड़े हों और असंख्य आत्माओं के मार्गदर्शन के स्रोत बनें। इस प्रकार, इस परम महान मानवीय सेवा के माध्यम से शांति और सहमति की किरणें प्रस्फुटित हो सकें और सभी क्षेत्रों एवं मानव-जगत को अमन-चैन मिल सके।

5. अमेरिका में अपने निवास के दौरान मैंने हर सभा में पुकार कर कहा और विश्व-शांति के आदर्शों के प्रसार के लिए लोगों का आह्वान किया। मैंने सीधे शब्दों में कहा कि यूरोप महादेश मानों हथियारों का आगार बन चुका है जिसे धधकने के लिए बस एक चिन्गारी की जरूरत है और यह कि आने वाले वर्षों में, या अगले दो वर्षों के दौरान, जॉन के प्रकटीकरण और डेनियल के ग्रंथ में जो-जो बातें अंकित हैं वे सब सत्य रूप से चरितार्थ और घटित होंगी। यह विषय, अपनी समस्त सम्भावनाओं के साथ, 12 अक्टूबर 1912 के सैन फ्रांसिस्को बुलेटिन में प्रकाशित हुआ था। आप उसका अवलोकन कर सकते हैं ताकि सत्य स्पष्ट रूप से प्रकट हो सके और इस तरह आप पूरी तरह यह महसूस कर सकें कि यह दिव्य सुरभि के प्रसार का समय है।

6. मनुष्य की उदारता स्वर्गिक होनी चाहिए अथवा, दूसरे शब्दों में, उसे दिव्य सम्पुष्टि की सहायता प्राप्त होनी चाहिए ताकि वह मानव-जगत को प्रकाशित करने का कारण बन सके।

7. अभिवादन और प्रशस्ति हो आपकी!

5. कनाडा और ग्रीनलैंड के बहाइयों के नाम पाती

5 अप्रैल 1916 को बहाउल्लाह की समाधि के निकट स्थित उद्यान में प्रकटित। कनाडा - न्यूफाउंडलैंड, प्रिंस एडवर्ड आइलैंड, नॉवा स्कॉटिया, न्यू ब्रंसविक, क्वीबेक, सैस्कैट्सेवेन, मैनिटोबा, औंटारियो, अल्बर्टा, ब्रिटिश कोलम्बिया, युकॉन, मैकेंज़ी, कीवैटिन, युंगावा, फ्रैंकलिन आइलैंड्स - और ग्रीनलैंड के बहाइयों को सम्बोधित।

1. वह परमेश्वर है! हे ईश्वरीय साम्राज्य के पुत्रों और पुत्रियों!

2. ईश्वर का गुणगान हो! हालाँकि संयुक्त राष्ट्र के अधिकांश राज्यों और शहरों में प्रभु की सुरभि का प्रसार हो चुका है और असंख्य लोग परमात्मा के साम्राज्य की ओर उन्मुख और अग्रसर हो रहे हैं, परन्तु कुछ राज्यों में एकता की पताका यथोचित रूप से नहीं फहराई जा सकी है और न ही ईशवाणी बाइबिल और कुरान जैसे पवित्र ग्रंथों के रहस्य ही उजागर किए जा सके हैं। इन सभी राज्यों में, मित्रों के केन्द्रित प्रयासों से एकता की ध्वजा अवश्य फहराई जानी चाहिए और दिव्य शिक्षाओं का प्रसार किया जाना चाहिए ताकि ये राज्य भी स्वर्गिक कृपाओं का अंशदान ग्रहण कर सकें और परम महान मार्गदर्शन प्राप्त करने के भागी बन सकें। इसी तरह कनाडा के राज्यों - जैसे न्यूफाउंडलैंड, प्रिंस एडवर्ड आइलैंड, नॉवा स्कॉटिया, न्यू ब्रंसविक, क्वीबेक, औंटारियो, मैनिटोबा, सैस्कैट्सेवेन, अल्बर्टा, ब्रिटिश कोलम्बिया, युंगावा, कीवैटिन, मैकेंज़ी, युकॉन, तथा आर्कटिक वृत्त में फ्रैंकलिन आइलैंड्स - में प्रभु के धर्मानुयायियों को चाहिए कि वे आत्मत्याग की भावना से काम करें और कनाडा के इन प्रान्तों में मार्गदर्शक प्रदीप की तरह बनें। यदि वे ऐसी विशाल सहृदयता दर्शाएँगे तो इसमें कोई संदेह नहीं कि उन्हें विश्वव्यापी दिव्य सम्पुष्टि प्राप्त होगी, स्वर्गिक सहचर उन्हें अबाध रूप से सशक्त करेंगे और वे महानतम विजय के भागीदार बनेंगे। ईश्वर की इच्छा होगी तो प्रभु-साम्राज्य का आह्वान कनाडा के उत्तर में स्थित फ्रैंकलिन द्वीपों और ग्रीनलैंड में निवास करने वाले एस्किमो लोगों तक भी पहुँचेगा। यदि ग्रीनलैंड में ईश्वरीय प्रेम की अग्नि सुलग उठेगी तो उस देश की सारी बर्फ पिघल जाएगी और इसकी ठंडी जलवायु में उष्णता का संचार होगा - अर्थात यदि ईश्वर प्रेम की तपिश लोगों के दिलों को छुएगी तो वह प्रदेश एक दिव्य गुलाब-वाटिका और एक स्वर्ग में बदल जाएगा और लोगों की आत्माएँ फलदार वृक्षों की तरह प्रचुर ताजगी और सौन्दर्य प्राप्त करेंगी। इसके लिए अत्यधिक प्रयास की जरूरत है। यदि आप ऐसा प्रयास कर सकें जिससे इन एस्किमो लोगों के बीच ईश्वर की सुरभि फैल सकेगी तो इसका प्रभाव बहुत ही बड़ा और दूरगामी होगा। महान ग्रंथ कुरान में मुहम्मद

साहब ने कहा है: ‘‘वह दिन आएगा जबकि एकता का प्रकाश पूरे विश्व को आलोकित करके रख देगा। धरती अपने प्रभु की रोशनी से प्रदीप्त हो उठेगी।’’[७] दूसरे शब्दों में, धरती ईश्वर के प्रकाश से भर उठेगी। वह प्रकाश एकता का प्रकाश है। “परमेश्वर के सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है”। एस्किमो लोगों के द्वीप-प्रायद्वीप भी इसी धरती के हिस्से हैं। अतः उन्हे भी समान रूप से परम महान मार्गदर्शन का अंशभाग प्राप्त होना चाहिए।

3. अभिवादन और प्रशस्ति हो आपकी!

6. संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा के बहाइयों के नाम पाती

8 अप्रैल 1916 को बहाउल्लाह की समाधि के निकट स्थित उद्यान में प्रकटित। संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा के बहाइयों को सम्बोधित।

1. वह परमेश्वर है! हे आशीर्वादित आत्माओं!

2. मैं आपके लिए असीम सफलता और समृद्धि की कामना करता हूँ और दिव्य जगत में आपमें से प्रत्येक के लिए परिपूर्ण सम्पुष्टि की याचना करता हूँ। आपसे मेरी आशा है कि आपमें से प्रत्येक इस संसार के क्षितिज पर एक ध्रुवतारे की तरह जगमाएगा और ईश्वर के इस उद्यान में अनन्त फलों और परिणामों को उत्पन्न करने वाला एक आशीर्वादित वृक्ष बनेगा।

3. इसलिए मैं उस दिशा में आपको मार्गदर्शित करता हूँ जो स्वर्गिक सम्पुष्टि और ईश्वरीय साम्राज्य में आपके प्रकाशित होने में लाभदायक होगा।

4. वह मार्गदर्शन यह हैः अलास्का एक विशाल देश है। हालाँकि परम दयालु परमेश्वर की एक सेविका उस भाग में यात्रा करने गई है, वह एक सार्वजनिक पुस्तकालय में लाइब्रेरियन है और अपनी क्षमतानुसार प्रभुधर्म का संदेश देने में निरत है परन्तु उस विशाल प्रदेश में अभी ईश्वरीय साम्राज्य का आह्वान नहीं सुनाया जा सका है।

5. परम महान ईसा मसीह का आह्वान है: "तुम संसार के पूरब और पश्चिम के देशों की यात्राएँ करो और ईश्वर के साम्राज्य की ओर लोगों का आह्वान करो।"[10] इस तरह ईश्वर की करुणा समस्त मानवजाति में व्याप्त होगी। आपको यह नहीं लगना चाहिए कि ईश्वरीय मार्गदर्शन के प्रभाव से वंचित उस क्षेत्र को त्याग देने की अनुमति है। अतः, जहाँ तक सम्भव हो सके उस क्षेत्र में कुशलता से अपनी बात कह सकने वाले प्रवक्ताओं को भेजने के लिए भरपूर प्रयास करें - ऐसे लोगों को जो ईश्वर के सिवा अन्य सबसे अनासक्त हैं, जो परमात्मा की सुरभि से आकर्षित हैं तथा सभी कामनाओं और लालसाओं से मुक्त एवं पावन हैं। उनका आहार और जीवनाधार ईश्वर की शिक्षाएँ होना चाहिए। सबसे पहले तो वे स्वयं ही उन सिद्धान्तों के अनुरूप जीवन जिएँ और उसके बाद लोगों को मार्गदर्शित करें। सम्भवतः, परमात्मा की इच्छा से, परम महान मार्गदर्शन का प्रकाश उस देश को प्रकाशित कर देगा, तथा ईश्वरीय प्रेम की गुलाब-वाटिका की सुगन्ध अलास्का के निवासियों के नासिका-रंध्रों को अपनी सुवास से भर देगी। ऐसी सेवा करने में सहायता पाने के लिए, आप आश्वस्त रहें कि आपके मस्तक अनन्त सम्प्रभुता के

मुकुट से शोभायमान होंगे, और एकमेवता की देहरी पर आप कृपा-प्राप्त तथा स्वीकृत सेवक बनेंगे।

6. इसी तरह मैक्सिको गणतंत्र बहुत ही महत्वपूर्ण है। उस देश के अधिकांश निवासी समर्पित कैथोलिक्स हैं। वे बाइबिल, ईशवाणी (गॉस्पेल) और नवीन दिव्य शिक्षाओं से बिल्कुल अनभिज्ञ हैं। वे यह नहीं जानते कि ईश्वर के धर्मों का आधार एक ही है और पवित्र प्रकटावतार सत्य के सूर्य की तरह हैं जो विभिन्न उदय-स्थलों से प्रकट होते हैं। ये लोग कट्टर विचारों के समुद्र में डूबे हुए हैं। यदि उन पर जीवन की एक साँस फूँक दी जाए तो उससे महान परिणाम प्रकट होंगे। लेकिन जो लोग प्रभुधर्म का संदेश देने मैक्सिको जाना चाहते हैं उनके लिए बेहतर होगा कि वे स्पेनिश भाषा से सुपरिचित हो जाएँ।

7. इसी तरह मैक्सिको के दक्षिण में स्थित छः मध्य अमेरिकी गणराज्यों - ग्वाटेमाला, होंडरास, सल्वाडोर, निकारागुआ, कोस्टा रिका, पनामा और सातवाँ देश बेलिज अथवा ब्रिटिश होंडरास - में जाने वाले प्रभुधर्म के संदेशवाहकों को भी स्पेनिश भाषा से सुपरिचित होना चाहिए।

8. अमेरिका के जनजातीय लोगों को भी बहुत महत्वपूर्ण समझें। इन आत्माओं की तुलना अरब प्रायद्वीप के प्राचीन बाशिन्दों से की जा सकती है जो कि मुहम्मद के मिशन से पहले बर्बर कबीलों की तरह थे। किन्तु जब उनके बीच मुहम्मद का प्रकाश फैला तो वे इतने प्रकाशित हो गए कि उन्होंने पूरे विश्व को जगमगा कर रख दिया। इसी तरह, यदि इंडियन लोगों को शिक्षित और मार्गदर्शित किया जाए तो इसमें कोई संदेह नहीं कि वे इतने प्रकाशित हो उठेंगे कि पूरे विश्व को आलोकित कर सकें।

9. यद्यपि ये सभी देश महत्वपूर्ण हैं लेकिन पनामा गणराज्य का खास महत्व है जहाँ पनामा नहर के माध्यम से अटलांटिक और प्रशान्त महासागरों का संगम होता है। यह अमेरिका से अन्य महाद्वीपों में यात्रा करने का मार्ग और केन्द्र है और भविष्य में इसका महत्व और भी ज्यादा बढ़ेगा।

10. इसी तरह वेस्ट इंडीज के द्वीपसमूह - जैसे क्यूबा, हाइती, प्युर्टोरिको, जमैका, लेसर ऐंटिल्स के द्वीपसमूह, बहामा आइलैंड्स, यहाँ तक कि छोटा-सा वैटलिंग आइलैंड - ये सब अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, खास तौर पर ग्रेटर ऐंटाइल्स समूह में स्थित दो अश्वेत गणराज्य, हाइती और सेंट डॉमिनेगो। ठीक वैसे ही, अटलांटिक महासागर में स्थित बरमुडा द्वीपसमूह भी महत्वपूर्ण है।

11. वैसे ही, दक्षिण अमेरिकी प्रायद्वीप के गणराज्य - कोलम्बिया, एक्वाडोर, पेरू, ब्राजील, ब्रिटिश गायना, डच गायना, फ्रेंच गायना, बोलिविया, चिली, अर्जेंटीना, उरुग्वे, पैराग्वे, वेनेजुएला, इनके अलावा दक्षिण अमेरिका के उत्तर, पूर्व और पश्चिम में स्थित द्वीपसमूह - जैसे फॉकलैंड द्वीपसमूह, दि गेलापैगोज, जुआन फर्नांडिज, टोबैगो एवं त्रिनिदाद, और ब्राजील के पूर्वी समुद्रतट पर स्थित बहिया सिटी भी महत्वपूर्ण हैं। कुछ समय से इसे (बहिया सिटी को) इस नाम से जाना जा रहा है, और इसका प्रभाव बहुत ही प्रबल होगा।

12. संक्षेप में, हे ईश्वर के अनुयायियों! अपने प्रयासों को उदात्त बनाएँ और अपने लक्ष्यों का विस्तार करें। महिमामय ईसा मसीह ने कहा है: "धन्य हैं गरीब लोग क्योंकि स्वर्ग का साम्राज्य उनका होगा।"[11] दूसरे शब्दों में, अनाम और ठौरहीन गरीब लोग आशीर्वादित हैं क्योंकि वे मानवजाति के अगुवा हैं। इसी तरह, कुरान में भी कहा गया है: "और हम उन पर कृपा दर्शाना चाहते हैं जिनका इस धरती पर निम्न दशा में पालन-पोषण किया गया है और हम उन्हें लोगों के बीच आध्यात्मिक नायक बनाना चाहते हैं, उन्हें हम अपने वारिस बनाना चाहते हैं।"[12] अथवा, हम असमर्थ जनों को अपनी सद्कृपा प्रदान करना चाहते हैं और उन्हें ईश्वरीय अवतारों और संदेशवाहकों का उत्तराधिकारी बनाना चाहते हैं।

13. अब समय आ गया है कि आप इस नाशवान संसार के प्रति आसक्ति के वस्त्र का परित्याग कर दें, इस भौतिक विश्व से पूर्णतः विमुक्त हो जाएँ, स्वर्गिक देवदूत बनें और उन देशों की यात्राएँ करें। मैं उस परमेश्वर की सौगन्ध खाता हूँ, जिसके सिवा और कोई ईश्वर नहीं है, कि आपमें से प्रत्येक जीवन का 'ज्वलंत देवदूत' (इज़राफिल) बनेगा और अन्य जनों की आत्माओं में जीवन की साँस फूँकेगा।

अभिवादन और प्रशस्ति हो आपकी!

14. प्रार्थना

हे अतुलनीय परमेश्वर! हे तू दिव्य साम्राज्य के स्वामी! ये आत्माएँ तुम्हारी स्वर्गिक सेनाएँ हैं। इनकी सहायता कर और परमोच्च स्वर्ग के सहचरों की सहायता से इन्हें विजयी बना, ताकि इनमें से प्रत्येक एक सैन्यदल की तरह बन सके और ईश्वर के प्रेम तथा दिव्य शिक्षाओं के प्रकाश से इन देशों पर विजय पा सके।

हे ईश्वर! तू उनका सहारा और उनका सहायक बन तथा बियाबानों, पर्वतों, घाटियों और अरण्यों में, मैदानों और महासागरों में तू उनका विश्वस्त साथी बन - ताकि वे स्वर्गिक साम्राज्य की शक्ति और पवित्र चेतना की साँस लेकर अपनी पुकार सुना सकें।

वस्तुतः. तू शक्तिशाली है, सामर्थ्यवान और सर्वशक्तिमान है और तू है परम प्रज्ञ, सुनने वाला और देखने वाला!

7. संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा के बहाइयों के नाम पाती

11 अप्रैल 1916 को बहजी स्थित भवन में अब्दुल-बहा के कक्ष में प्रकटित। संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा के बहाइयों को सम्बोधित।

1. वह परमेश्वर है! हे अमेरिका के सच्चे बहाइयों!

2. उस महामहिम 'अभीप्सित' का गुणगान हो कि आपको उस विशाल महाद्वीप में दिव्य शिक्षाओं के प्रसार में दिव्य सम्पुष्टि प्राप्त हुई है, उस क्षेत्र में आपने ईश्वरीय साम्राज्य का आह्वान गुंजाया है तथा उस क्षेत्र में 'सैन्य-समूहों के प्रभु' और महामहिम 'प्रतिज्ञापित अवतार' के शुभ समाचार की घोषणा की है। प्रभु का धन्यवाद हो कि इस उद्देश्य की पूर्ति में आपको सहायता और पुष्टि प्राप्त हुई है। यह केवल सैन्य-समूहों के प्रभु की सम्पुष्टि और पवित्र चेतना की साँस के कारण ही सम्भव हो सका है। परन्तु आपकी सफलता का पूरा पैमाना अभी भी प्रकट नहीं हुआ है और इसके महत्व का अनुमान अभी भी नहीं लगाया जा सका है। बहुत ही शीघ्र आप स्वयं अपनी आँखों से देखेंगे कि आपमें से प्रत्येक कितनी प्रखरता से किसी देदीप्यमान सितारे की तरह, अपने देश के आकाश में दिव्य मार्गदर्शन की प्रभा झलकाएँगे और उस देश के लोगों में अनन्त जीवन की गरिमा का संचार करेंगे।

3. जरा विचार कीजिए! ईसा मसीह के समय में उनके धर्मदूतों के महान पद और उनकी सम्पुष्टि के बारे में किसी को ज्ञान नहीं था और कोई भी उन्हें महत्व की निगाह से नहीं देखता था - नहीं, बल्कि उन्होंने उन्हें यातनाएँ दीं और उनकी खिल्ली उड़ाई। बाद में जाकर यह साबित हुआ कि इन धर्मदूतों, मेरी मैग्डेलिन और जॉन की माता मेरी के सिरों पर किस तरह प्रखर मणियों से आभूषित मुकुट रखे गए।

4. आपकी भावी उपलब्धियों का दायरा अभी भी अप्रकटित है। मेरी यह उत्कट आशा है कि निकट भविष्य में आपकी उपलब्धियों के परिणामों से यह पूरी धरती आंदोलित हो उठेगी। अतः, आपके लिए अब्दुल-बहा के मन में जो आशा सँजोयी हुई है वह यह है कि आपके प्रयासों से आपको अमेरिका में जो सफलता प्राप्त हुई है वही सफलता दुनिया के अन्य हिस्सों में भी आपके प्रयासों का सिरमौर बने - यह कि आपके माध्यम से प्रभुधर्म की प्रसिद्धि पूरे पूरब और पश्चिम तक फैल जाए और 'स्वर्गिक सैन्य-समूहों के प्रभु' के साम्राज्य के अवतरण की घोषणा धरती के सभी पाँचों महाद्वीपों में हो जाए।

5. अमेरिका के धर्मानुयायियों द्वारा जिस क्षण यह दिव्य संदेश अमेरिकी तटों से सुदूर क्षेत्रों - यूरोप, एशिया, अफ्रीका और ऑस्ट्रेलेशिया और प्रशान्त महासागर के अत्यंत दूरस्थ द्वीपों - तक प्रसारित किया जाएगा उसी क्षण यह समुदाय स्वयं को एक अनन्त साम्राज्य के सिंहासन पर सुरक्षित रूप से विराजमान पाएगा। तब पूरी दुनिया के लोग इस बात के साक्षी बनेंगे कि यह समुदाय आध्यात्मिक रूप से प्रकाशित और दिव्य मार्गदर्शन से सम्पन्न है। तब यह सारी धरती उसकी गरिमा और महानता के गुणगानों से गुंजित होगी। अनुयायियों के एक दल को जो कि उनकी भाषाएँ बोलने में सक्षम हो, अनासक्त, पवित्र, ईश्वर के प्रेम से भरा हुआ और पावन-हृदय हो, चाहिए कि वह प्रशान्त महासागर के तीन महाद्वीप समूहों - पॉलिनेशिया, माइक्रोनेशिया और मैलेनेशिया - की ओर रुख करे और इन द्वीपसमूहों तथा उनके निकटस्थ अन्य द्वीपों - जैसे न्यू गायना, बोर्नियो, जावा, सुमात्रा, फिलिपीन द्वीप, सोलोमन द्वीप, फिजी द्वीप, न्यू हेब्राइड्स, लॉयल्टी आइलैंड, न्यू कैलेडोनिया, बिस्मार्क द्वीपसमूह, सेरैम, सेलेब्स, फ्रेंडली आइलैंड्स, समोआ द्वीप, सोसायटी आइलैंड्स, कैरोलिन आइलैंड्स, लो आर्किपिलैगो, मार्क्विसस, हवाई द्वीप, जिल्बर्ट आइलैंड, मोलक्क्स, मार्शल आइलैंड, टिमूर एवं अन्य द्वीपों - की यात्राएँ करें। ईश्वर के प्रेम से लबालब भरे हृदय से, ईश्वर के स्मरण का समारोह मनाती वाणी से, ईश्वर के साम्राज्य की ओर उन्मुख नयनों से, उन्हें चाहिए कि वे सभी लोगों के समक्ष स्वर्गिक सैन्य-समूहों के प्रभु के प्रकटावतरण के सुसमाचार की घोषणा करें। आप यह निश्चित रूप से जान लें कि आप जिस किसी जनसभा में प्रवेश करेंगे, पवित्र चेतना की तरंगें वहाँ उठती रहेंगी और 'आशीर्वादित सौन्दर्य' की स्वर्गिक कृपा उस जनसभा को आच्छादित किए रहेगी।

6. आप इस बात पर विचार करें कि प्रभु-साम्राज्य की सुपुत्री और 'आशीर्वादित पूर्णता' की प्रिय सेविका मिस ऍग्निस अलैक्जैंडर ने अकेले ही हवाई द्वीपों और होनोलुलु द्वीप की यात्रा की और अब जापान में आध्यात्मिक विजय प्राप्त कर रही हैं! आप इस बात पर विचार करें कि इस सुपुत्री को हवाई द्वीपों में कैसे सम्पुष्टि प्राप्त हुई कि वह जनसमूह के लिए मार्गदर्शन का साधन बन सकी।

7. इसी तरह, मिस नॉब्लॉच ने अकेले जर्मनी की यात्रा की। उसे कितनी दिव्य सम्पुष्टि प्राप्त हुई! अतः आप यह निश्चित जान लें कि इस युग में जो कोई भी दिव्य सुरभि के प्रसार के लिए उठ खड़ा होगा उसे प्रभु-साम्राज्य के समूहों से दिव्य

सम्पुष्टि प्राप्त होगी और 'आशीर्वादित पूर्णता' के अनुदान और कृपाएँ उसे आच्छादित करेंगी।

8. भले ही पैदल ही सही और अत्यंत गरीबी की दशा में भी काश कि मैं इन क्षेत्रों की यात्राएँ कर पाता और शहरों, गाँवों, पर्वतों, मरुभूमियों और समुद्र क्षेत्रों में 'या बहा-उल-आभा' का उद्घोष और दिव्य शिक्षाओं का प्रसार कर पाता! अफ़सोस कि मैं ऐसा नहीं कर सकता। मुझे इस बात का कितना अफ़सोस है! ईश्वर की कृपा से आप यह कर पाएँ।

9. वर्तमान समय में, मिस अलैक्जैंडर के प्रयासों से हवाई द्वीप में अनेक लोग प्रभुधर्म के समुद्र-तट तक पहुँच पाए हैं। जरा विचार कीजिए कि यह कितनी खुशी, कितने आनन्द की बात है! मैं सैन्य-समूहों के प्रभु की सौगन्ध खाकर घोषणा करता हूँ कि यदि इस आदरणीया पुत्री ने कोई साम्राज्य खड़ा किया होता तो वह साम्राज्य भी इतना महान नहीं होता! क्योंकि उसने जो साम्राज्य स्थापित किया है वह अनन्त साम्राज्य है और उसकी गरिमा असीम है।

10. इसी तरह, यदि प्रभुधर्म के कुछ संदेशवाहक अन्य द्वीपों और हिस्सों में जा पाते, जैसे कि ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप में, न्यूजीलैंड, तस्मानिया और जापान, एशियाई रूस, कोरिया, फ्रेंच इंडो-चाइना, स्याम, खाड़ी के प्रदेशों में, भारत, श्रीलंका और अफ़गानिस्तान में भी, तो अत्यंत महान परिणाम सामने आते। कितना अच्छा होता कि स्त्रियों और पुरुषों का एक दल साथ-साथ चीन और जापान की यात्रा पर जा सकता - ताकि प्रेम का यह बन्धन और मजबूत होता और इस आवागमन के माध्यम से वे मानव-जगत की एकता स्थापित कर पाते, ईश्वर के साम्राज्य की ओर लोगों का आह्वान कर पाते और शिक्षाओं का प्रसार कर पाते!

11. इसी तरह, यदि सम्भव हो तो, उन्हें अफ्रीका, कैनरी आइलैंड, केप वर्डे आइलैंड, मदीरा द्वीप, रीयूनियन आइलैंड्स, सेंट हेलेना, जंजीबार, मॉरीशस, इत्यादि जगहों की भी यात्राएँ करनी चाहिए और उन देशों में लोगों का ईश्वरीय साम्राज्य की ओर आह्वान करना चाहिए और या बहा-उल-आभा का उद्घोष करना चाहिए। उन्हें मेडागास्कर द्वीप पर भी मानव-जगत की एकता का परचम फहराना चाहिए।

12. इन देशों और द्वीपों की भाषाओं में पुस्तक-पुस्तिकाओं इत्यादि का लेखन अथवा अनुवाद किया जाना चाहिए ताकि उन्हें सभी क्षेत्रों, सभी दिशाओं में वितरित किया जा सके।

13. कहा जाता है कि दक्षिण अफ्रीका में हीरे की एक खान का पता चला है। हालाँकि यह खान बड़ी कीमती है लेकिन फिर भी वह पत्थर ही तो है। कदाचित, ईश्वर की इच्छा से मानवता की खान का पता चले और प्रभु-साम्राज्य के प्रखर मोती उभर कर सामने आएँ।

14. संक्षेप में, पूरी दुनिया को सताने वाले इस युद्ध ने हृदयों में ऐसी ज्वाला भर दी है कि इसका शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। दुनिया के सभी देशों में विश्व-शांति की अभिलाषा जन-मानस में भरने लगी है। ऐसी एक भी आत्मा नहीं है जिसे अमन-चैन की चाहत नहीं। ग्रहणशीलता की एक अत्यंत अद्‌भुत स्थिति साकार रूप लेने लगी है। यह ईश्वर के परम विवेक के माध्यम से हुआ है ताकि क्षमताओं का निर्माण हो सके, मानव-जगत की एकता की ध्वजा लहराई जा सके और विश्व-शांति एवं दिव्य सिद्धान्तों के बुनियादी तत्वों का पूर्व और पश्चिम में विस्तार किया जा सके।

15. अतः, हे ईश्वर में आस्था रखने वालों! आप अपने प्रयासों के बीज बोएँ और इस युद्ध के बाद आप ब्रिटिश आइल, फ्रांस, जर्मनी, हॉलैंड, ऑस्ट्रिया-हंगरी, रूस, इटली, स्पेन, बेल्जियम, स्विटजरलैंड, नॉर्वे, स्वीडन, डेनमार्क, हॉलैंड, पुर्तगाल, रोमानिया, सर्बिया, मौंटिनीग्रो, बुल्गारिया, ग्रीस, एंडोरा, लेखटेंस्टेन, लक्ज़ेमबर्ग, मोनैको, सैन मैरिनो, बेलैरिक आइल्स, कोर्सिका, सार्डीनिया, सिसली, माल्टा, आइसलैंड, फैरो आइलैंड, शेटलैंड आइलैंड, हेब्राइड्स और ऑरकेनी आइलैंड्स में दिव्य शिक्षाओं को प्रसारित करें।

16. इन सभी देशों में आप मार्गदर्शन के क्षितिज से ध्रुवतारे की तरह जगमगाएँ। अभी तक आपने अथक प्रयास किया है। अब आगे से आपके प्रयासों में हजारों गुणा तेजी आनी चाहिए। इन देशों, राजधानियों, द्वीपों, सभाओं, चर्चों में लोगों को आभा साम्राज्य में प्रवेश करने का आह्वान सुनाएँ। आपके प्रयासों के दायरे का विस्तार जरूरी है। उनका दायरा जितना ही विस्तृत होगा, दिव्य सहायता के उतने ही अद्‌भुत प्रमाण भी दृष्टिगोचर होंगे।

17. आपने यह गौर किया है कि जब अब्दुल-बहा शरीर से अत्यंत दुर्बल और अशक्त थे, जब वे बीमार थे और उनमें चलने-फिरने की शक्ति नहीं थी तो भी इस शारीरिक दशा के बावजूद उन्होंने अनेक देशों का दौरा किया। यूरोप और अमेरिका में, गिरजाघरों में, वे दिव्य सिद्धान्तों के प्रसार के लिए अधिवेशन और सभाओं के आयोजन में जुटे रहे और उन्होंने आभा साम्राज्य के प्रकटीकरण की

ओर लोगों का आह्वान किया। आपने यह भी देखा है कि किस तरह 'आशीर्वादित पूर्णता' की सम्पुष्टि की छत्रछाया हर किसी पर पड़ी। भौतिक विश्राम, विश्रांति, विलासिता और इस इहलोक की आसक्ति में डूबे रहने से क्या मिलने वाला है? यह स्पष्ट है कि इन वस्तुओं के पीछे भागने वाले इन्सान को अंत में पछतावे और नुकसान के सिवा कुछ नहीं मिलने वाला।

18. अतः, व्यक्ति को चाहिए कि वह इन चीजों से अपनी आँखें मोड़ ले, अनन्त जीवन, मानव-जीवन की उदात्तता, स्वर्गिक विकास, पावन चेतना, ईश्वरीय वाणी के प्रसार, धरती के निवासियों के मार्गदर्शन, विश्व शांति की घोषणा और मनुष्य-जगत की एकता के उद्घोष की कामना करें। यही कार्य है! अन्यथा अन्य जीव-जन्तुओं की तरह व्यक्ति इस भौतिक जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने में ही निमग्न रहे, जिनकी संतुष्टि ही जानवरों की उच्चतम लालसा है, और वह चैपायों की तरह इस धरती पर विचरण करे।

19. आप लोग यह विचार करें! मनुष्य इस संसार में चाहे कितनी भी धन-सम्पदा अर्जित कर ले, सुख-समृद्धि पा ले किन्तु वह एक गाय की तरह आत्मनिर्भर नहीं हो सकता। ये मोटी-तगड़ी गायें विशाल पठार पर स्वतंत्र विचरण किया करती हैं। समस्त चारागाह और हरित भूमि उनके चरने के लिए ही है और सभी सोते और फव्वारे उनकी प्यास मिटाने के लिए। चाहे वह कितना भी चर लें, उनके लिए चारागाह का अंत ही नहीं होता। स्पष्ट है कि उन्होंने अत्यंत सुविधा के साथ ये भौतिक उदारताएँ प्राप्त की हैं।

20. इससे भी अधिक आदर्श जीवन पक्षियों का है। पहाड़ के किसी शिखर, ऊँचाई पर हिलती डालियों पर चिड़िया अपने लिए राजमहलों से भी अधिक सुन्दर घोंसला बना लेती है। उसे विशुद्ध हवा मिलती है, स्फटिक स्वच्छ शीतल जल मिलता है और उसे मिलता है एक आकर्षक मनमोहक परिदृश्य। ऐसे ही भव्य परिवेश में वह अपने जीवन के चंद दिन गुजारती है। मैदान की सारी फसलें उसके अधिकार में हैं, और यह सारी सम्पदा उसने बिना किसी मेहनत के हासिल कर ली है। अतः, मनुष्य इस संसार में चाहे कितनी भी उन्नत्ति क्यों न कर ले वह इन चिड़ियों जैसा दर्जा नहीं पा सकता। इस तरह यह स्पष्ट हो जाता है कि जहाँ तक इस संसार की बात है, मनुष्य चाहे जितना भी प्रयास कर ले और अथक परिश्रम करता रहे तो भी उसे एक छोटे से पक्षी की तरह समृद्धि, स्वतंत्रता और आत्म-निर्भरता प्राप्त नहीं हो सकती। इससे यह तथ्य प्रमाणित और स्थापित होता है कि मनुष्य की रचना इस क्षणभंगुर संसार के जीवन के लिए नहीं हुई है - नहीं, बल्कि उसका

सृजन हुआ है अनन्त पूर्णताओं को प्राप्त करने के लिए, मानव-जगत की उच्चता हासिल करने के लिए, ईश्वरीय दहलीज के करीब पहुंचने के लिए और अनन्त सम्प्रभुता के आसन पर विराजमान होने के लिए।

21. आप पर बहा का प्रकाश विराजे!

22. जो कोई भी किसी स्थान के लिए शिक्षण की यात्रा के लिए चल पड़ा हो उसे परदेस की धरती पर अपनी यात्राओं के दौरान इस प्रार्थना का पाठ करना चाहिए:

23. हे ईश्वर, मेरे परमेश्वर! तू देखता है मुझे आनन्द से विभोर और तेरे भव्य साम्राज्य की ओर आकर्षित, लोगों के बीच तेरे प्रेम की अग्नि से प्रदीप्त, इस विशाल, विस्तीर्ण धरती पर तेरे साम्राज्य के एक दूत के रूप में, तेरे सिवा अन्य सबसे विमुक्त, सिर्फ तुझ पर आश्रित, आराम और सुख-सुविधा का त्याग किए हुए, अपने घर-बार से दूर, इन क्षेत्रों में भ्रमण करता हुआ, भूमि पर पड़ा हुआ एक अजनबी, तेरी उदात्त देहलीज के समक्ष अवनत, तेरी सर्वशक्तिमान महिमा के स्वर्ग के प्रति समर्पित, घनघोर रात्रि बेला और उषाकाल में तुझसे याचना करते हुए, सुबह और शाम तेरी प्रार्थना और तेरा आह्वान करते हुए कि तेरे धर्म की सेवा करने, देश-विदेश में तेरी शिक्षा के प्रसार तथा पूर्व और पश्चिम में तेरी वाणी को गौरवान्वित करने में तू उदारतापूर्वक मेरी सहायता कर।

हे प्रभु! मेरे मेरुदंड को सशक्त कर, अत्यंत प्रयासपूर्वक मुझे अपनी सेवा करने में समर्थ बना और मुझे इन क्षेत्रों में अकेला और बेसहारा, मेरे अपने भरोसे मत छोड़।

हे स्वामी! मेरे एकान्त में तू मुझे अपने साथ वार्तालाप का वरदान दे और इस परदेस की धरती पर मेरा सखा बन।

वस्तुतः, तू जो भी चाहता है उसमें तू जिस किसी को पुष्ट करना चाहे उसका ‘पुष्टिदाता’ है, और तू, वस्तुतः, सर्वसामर्थ्यमय, सर्वशक्तिमान है।

8. संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा के बहाइयों के नाम पाती

19 अप्रैल 1916 को बहजी स्थित भवन में अब्दुल-बहा के कक्ष में तथा 20 अप्रैल को बहजी स्थित भवन के तीर्थयात्री खंड में, और 22 अप्रैल को बहाउल्लाह की समाधि के निकट स्थित उद्यान में प्रकटित। संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा के बहाइयों को सम्बोधित।

1. वह परमेश्वर है! हे बहाउल्लाह के धर्मदूतों! मेरा जीवन आप पर बलिहारी हो!

2. प्रतिज्ञापित अवतार के आशीर्वादित व्यक्तित्व को 'पवित्र पुस्तक' में 'सैन्य-समूहों के प्रभु' कहकर बताया गया है - स्वर्गिक सेनाओं के स्वामी। स्वर्गिक सेनाओं का अर्थ वे आत्माएँ हैं जो इस मानव-संसार से सर्वथा निस्पृह हैं, वे लोग जो स्वर्गिक चेतना से रूपांतरित हो चुके हैं और स्वर्गिक देवदूत बन चुके हैं। ऐसी आत्माएँ 'सत्य के सूर्य' की किरणें हैं जो सभी महाद्वीपों को प्रकाशित करके रख देंगी। इनमें से प्रत्येक के हाथ में एक तुरही है जो सभी क्षेत्रों के ऊपर जीवन की साँस फूँक रही है। वे मानवीय अवगुणों और प्रकृति-जगत की खामियों से मुक्त हैं, वे ईश्वरीय विशेषताओं से विभूषित और सर्वदयालु परमात्मा की सुरभि से आकर्षित हैं। ईसा मसीह के धर्मदूतों की ही तरह, जो कि उनकी चेतना से आप्लावित थे, ये आत्माएँ भी परम पावन बहाउल्लाह की चेतना से आप्लावित हैं। अर्थात बहाउल्लाह के प्रेम ने उनके अंग-प्रत्यंग को इस तरह नियंत्रित कर रखा है कि मानव-जगत के लोभ-लालच उन्हें तनिक भी प्रभावित नहीं कर सकते।

3. ये आत्माएँ ईश्वर की सेनाएँ और पूर्व एवं पश्चिम की विजेता हैं। यदि उनमें से कोई एक किसी दिशा में उन्मुख होकर ईश्वर के साम्राज्य की ओर लोगों का आह्वान करे तो सभी आदर्श शक्तियाँ और प्रभु की सम्पुष्टियाँ उसे सहारा देने और उसे सशक्त बनाने आ जुटेंगी। उसे सारे द्वार खुले दिखेंगे और सभी मजबूत दुर्ग एवं अभेद्य किले धूल-धूसरित हो जायेंगे। वह एक अकेला ही विश्व की सेनाओं पर आक्रमण कर सकेगा, सभी देशों की एकजुट वाम और दक्षिण कमानों को पराजित कर देगा, सभी राष्ट्रों के सैन्य-समूहों को भेदकर आगे बढेगा और धरती के केन्द्रबिंदु पर आक्रमण की चोट करेगा। ईश्वर के सैन्य-समूहों का यही अर्थ है।

4. बहाउल्लाह के अनुयायियों में से ऐसा कोई भी व्यक्ति जो इस महान पद को प्राप्त करेगा उसे 'बहाउल्लाह के धर्मदूत' के नाम से जाना जाएगा। अतः आप दिलो-जान से यह प्रयत्न करें कि आप इस महान और उच्च पद को पा सकें, अनन्त गरिमा के सिंहासन पर विराजमान हो सकें और ईश्वरीय साम्राज्य के उस ज्योतिर्मय

मुकुट से अपने मस्तक को आभूषित कर सकें जिसकी प्रखर मणियों की कांति सदियों और युगचक्रों के बीतने पर भी जगमगाती रहेगी।

5. हे दयालु मित्रों! अपनी उदारता को उन्नत करें और स्वर्ग के शिखर तक ऊँची उड़ान भरें ताकि आपके आशीर्वादित हृदय सत्य के सूर्य अर्थात बहाउल्लाह की किरणों से दिन-प्रतिदिन अधिक से अधिक प्रकाशित होते चले जाएँ, आपकी चेतना को प्रति क्षण नवजीवन मिले और प्रकृति के संसार का अंधकार पूर्णतः विलीन हो जाए। इस तरह आप एक जीवन्त प्रकाश और साकार चेतना का रूप धारण कर सकेंगे, इस दुनिया के तुच्छ विषयों से उदासीन और दिव्य जगत के विषयों के स्पर्श से भर उठेंगे।

6. उन द्वारों को देखें जिन्हें बहाउल्लाह ने आपके समक्ष खोल रखा है! विचार कीजिए कि वह पद जिसे प्राप्त करना आपकी नियति में लिखा है कितना उच्च और महान है, आपको प्राप्त कृपाएँ कितनी विलक्षण हैं। यदि हम इस मदिर के प्याले को पीकर मस्त हो सकें तो फिर इस धरती का साम्राज्य हमारी नजर में बच्चों के खेल से भी अधिक निम्न प्रतीत होगा। यदि लोग इस क्रीड़ाभूमि में समस्त संसार की सत्ता का मुकुट भी रख दें और हममें से प्रत्येक को उसे स्वीकार करने के लिए आमंत्रित करें तो भी हम, निस्संदेह, झुकेंगे नहीं और उसे लेने से इन्कार कर देंगे।

7. परन्तु इस परम पद को प्राप्त करना कतिपय शर्तों को पूरा करने पर निर्भर है:

8. पहली शर्त ईश्वर कि संविदा में दृढ़ता, क्योंकि संविदा की शक्ति बहाउल्लाह के धर्म की भ्रमित लोगों के संदेहों से रक्षा करेगी। यह प्रभुधर्म का सुदृढ़ दुर्ग है और ईश्वर के धर्म का मजबूत स्तम्भ। आज के युग में ईश्वर की संविदा के सिवा और कोई भी शक्ति बहाई जगत की एकता संरक्षित नहीं कर सकती। ऐसा न होने पर मतभेदों की अत्यंत प्रचंड आँधी बहाई विश्व को आच्छादित कर देगी। यह स्पष्ट है कि मानव-जगत की एकता की धुरी संविदा की शक्ति ही है और कुछ नहीं। यदि संविदा नहीं होती, यदि सर्वोच्च की लेखनी उसे प्रकट नहीं करती और यदि सत्य के सूर्य की किरणों की तरह 'संविदा की पुस्तक' विश्व को प्रकाशित नहीं करती तो ईश्वर के धर्म की शक्तियाँ बिल्कुल बिखर गई होतीं और कतिपय आत्माएँ जो अपनी ही लालसाओं और भ्रष्ट इच्छाओं की गुलाम हैं, वे अपने हाथों में कुल्हाड़ी उठाकर 'आशीर्वादित वृक्ष' की जड़ें ही काट डालतीं। हर व्यक्ति अपनी ही इच्छाओं को आगे रखता और हर आदमी अपनी ही राय प्रकट करता! इस महान संविदा के होते हुए भी, कुछ दिग्भ्रमित लोग अपने घोड़ों पर सवार होकर युद्धभूमि में आ गए, यह सोचते हुए कि शायद वे ईश्वर के धर्म की जड़ों को

कमजोर कर सकेंगे: किन्तु ईश्वर का धन्यवाद हो कि वे सब के सब पश्चात्ताप और हानि के शिकार हुए और बहुत ही जल्द वे स्वयं को घोर हताशा की स्थिति में पाएँगे। अतः शुरू में धर्मानुयायियों को चाहिए कि वे संविदा में अपने कदम दृढ़ करें ताकि बहाउल्लाह की सम्पुष्टि उन्हें हर दिशा से प्राप्त हो सके, परमोच्च दरबार के अंतरंगों से उन्हें सहायता और सहारा मिल सके और किसी पत्थर पर उकेरी गई चित्रकृति की तरह अब्दुल-बहा की शिक्षाएँ और सलाह उनकी हृदय-पाटियों पर स्थायी एवं अमिट रूप से अंकित हो जाएँ।

9. दूसरी शर्त: अनुयायियों के बीच प्रेम और बंधुता का होना। दिव्य मित्रों को चाहिए कि वे एक-दूसरे के प्रति आकर्षित हों और परस्पर प्रेम करें तथा एक-दूसरे के लिए अपने जीवन का बलिदान करने के लिए तत्पर रहें। यदि धर्मानुयायियों में से कोई एक व्यक्ति दूसरे से मिले तो ऐसा लगना चाहिए कि जैसे सूखे होठों वाला कोई अत्यंत प्यासा व्यक्ति जीवन-जल के फव्वारे के पास आ पहुँचा हो या किसी प्रेमी की भेंट उसके सच्चे प्रियतम से हुई है, क्योंकि पवित्र प्रकटीकरणों के आविर्भाव के सम्बंध में एक परम महान विवेक यह रहा है कि एक आत्मा दूसरी आत्मा को जाने और एक-दूसरे के साथ अंतरंग बने, ईश्वर के प्रेम की शक्ति उन सबको एक ही समुद्र की लहरें बना दे, एक ही गुलाब-वाटिका के फूल और एक ही स्वर्ग के सितारे। पवित्र अवतारों के आगमन के पीछे यही विवेक रहा है! जब परम महान कृपा स्वयं को धर्मानुयायियों के हृदयों में प्रकट करती है तो प्रकृति का संसार ही बदल जाएगा, इस परिवर्तनशील अस्तित्व-जगत का अंधकार मिट जाएगा और स्वर्गिक प्रकाश प्राप्त होगा। तब सारा संसार आभा-स्वर्ग में बदल जाएगा। ईश्वर का हर अनुयायी विलक्षण फलों को उत्पन्न करने वाला एक आशीर्वादित वृक्ष बन जाएगा।

10. हे मित्रों! बंधुता, बंधुता! प्रेम, प्रेम! एकता, एकता! - ताकि बहाई धर्म इस अस्तित्व के संसार में प्रकट होकर अपनी झलक दिखा सके। मेरे विचार आप पर ही केन्द्रित हैं और आपका उल्लेख करते हुए मेरा हृदय उमंगित हो रहा है। यदि आप जान पाते कि मेरी आत्मा किस तरह आपके प्रेम से प्रदीप्त है तो आपके हृदय में प्रसन्नता का ऐसा प्रवाह उठता कि आप एक-दूसरे के प्रति प्रेम से भर उठते।

11. तीसरी शर्त हैः प्रभुधर्म के संदेशवाहकों को चाहिए कि वे महाद्वीप, नहीं, बल्कि सम्पूर्ण विश्व के सभी हिस्सों में सतत् यात्रा करते रहें। लेकिन उन्हें अब्दुल-बहा की तरह यात्रा करनी चाहिए जिन्होंने अमेरिका के शहरों की यात्राएँ कीं। वे हर प्रकार की आसक्ति से मुक्त और पावन थे, अत्यंत निर्लिप्त। ठीक वैसे ही जैसेकि पावन ईसा मसीह ने कहा था: “अपने पैरों की धूल तक झाड़कर हटा दो।”[13]

12. आपने देखा होगा कि अमेरिका-प्रवास के दौरान बहुत से लोगों ने अत्यंत विनम्र और प्रार्थना भाव के साथ उपहार अर्पित करना चाहा, लेकिन 'आशीर्वादित पूर्णता' की शिक्षाओं और उनके आदेशों के अनुरूप, इस सेवक ने कोई भी वस्तु स्वीकार नहीं की, हालाँकि कई अवसरों पर हम अत्यंत कठिन परिस्थितियों में थे। दूसरी ओर, जब कोई व्यक्ति ईश्वर के निमित्त, स्वेच्छा से और अपनी निर्मल अभिलाषा के साथ कोई योगदान देना चाहे (किसी धर्म-संदेशवाहक के खर्चों को पूरा करने के लिए) तो उसे प्रसन्न करने के लिए, संदेशवाहक एक छोटी-सी राशि स्वीकार कर सकता है, किन्तु उसे बिल्कुल संतोष के साथ जीवन जीना चाहिए।

13. इसका उद्देश्य यह है कि धर्म-संदेशवाहक का अभिप्राय एकदम शुद्ध होना चाहिए, उसका हृदय स्वतंत्र, उसकी चेतना आकर्षित, उसके विचार शांतिपूर्ण, उसका इरादा दृढ़, उसकी उदारता उच्च कोटि की और ईश्वर के प्रेम में उसे एक प्रदीप्त मशाल की तरह होना चाहिए। यदि वह ऐसा होगा तो उसकी पवित्र साँस चट्टानों पर भी असर डालेगी, अन्यथा उसका कोई भी प्रभाव नहीं पड़ेगा। जब तक कोई व्यक्ति स्वयं पूर्णता को नहीं प्राप्त करेगा तब तक वह दूसरों की कमियों को कैसे दूर कर सकेगा? यदि वह ईश्वर के सिवा अन्य सभी वस्तुओं से अनासक्त न हो तो वह दूसरों को निस्पृहता का पाठ कैसे पढ़ा सकेगा?

14. संक्षेप में, हे धर्मानुयायियों! आप लोग प्रयास करें ताकि ईश्वर के धर्म की घोषणा तथा ईश्वरीय सुरभि के प्रसार के लिए आप प्रत्येक साधन का लाभ उठा सकें।

15. अन्य बातों में शामिल हैं शिक्षण हेतु सभाओं का आयोजन करें ताकि आशीर्वादित आत्माएँ एवं पुराने धर्मानुयायी धर्म-निर्देश की पाठशाला में ईश्वरीय प्रेम का नवयौवन प्राप्त कर सकें, तथा उन्हें दिव्य प्रमाणों एवं अकाट्य तर्कों की शिक्षा देना, प्रभुधर्म के इतिहास पर प्रकाश डालना, तथा दिव्य ग्रंथों व पातियों में प्रतिज्ञापित अवतार के प्रकटीकरण के बारे में अंकित एवं विद्यमान भविष्यवाणियों और प्रमाणों का अर्थ समझाना, ताकि युवा लोग इन सब बातों के बारे में पर्याप्त ज्ञान हासिल कर सकें।

16. इसी तरह, जब कभी भी सम्भव हो, पातियों के अनुवाद के लिए एक समिति जरूर गठित की जानी चाहिए। जिन विवेकशील लोगों ने फारसी, अरबी एवं अन्य विदेशी भाषाओं का अध्ययन किया है और उनमें महारत हासिल की है,

अथवा जिन्हें किसी भी विदेशी भाषा का ज्ञान है, उन्हें पातियों तथा ईश्वरीय प्रकटीकरण के प्रमाण सम्बन्धी पुस्तकों का अनुवाद आरम्भ कर देना चाहिए और उन पुस्तकों को प्रकाशित करने एवं धरती के सभी पाँच महाद्वीपों में वितरित करने का प्रयास किया जाना चाहिए।

17. ठीक ऐसे ही, 'स्टार ऑफ दि वेस्ट' पत्रिका का सम्पादन नियमित रूप से किया जाना चाहिए किन्तु इसकी विषय-सामग्री ईश्वर के धर्म की घोषणा के बारे में होनी चाहिए ताकि पूर्व और पश्चिम दोनों ही संसारों के लोग महत्वपूर्ण घटना-क्रमों से परिचित हो सकें।

18. संक्षेप में, सभी सभाओं में: चाहे वे व्यक्तिगत स्तर पर आयोजित हों या सार्वजनिक स्तर पर - उन विषयों के सिवा जो विचाराधीन हैं, अन्य किसी बात पर परामर्श नहीं होना चाहिए और सभी लेख प्रभुधर्म पर ही केन्द्रित हों। अनैतिक किस्म की बातें हरगिज़ नहीं होनी चाहिए और विवाद करना तो बिल्कुल ही निषिद्ध है।

19. विभिन्न दिशाओं में यात्रा करने वाले धर्म-शिक्षकों को उस देश की भाषा जरूर आनी चाहिए जिसमें वे प्रवेश करेंगे। उदाहरण के लिए, जापानी भाषा में प्रवीण व्यक्ति जापान की यात्रा कर सकते हैं और चीनी भाषा जानने वाले व्यक्ति चीन जा सकते हैं, इत्यादि।

20. सारांश रूप में, इस विश्वव्यापी युद्ध के बाद, लोगों में दिव्य शिक्षाओं को सुनने के प्रति असाधारण ग्रहणशीलता का विकास हुआ है, क्योंकि इस युद्ध से जो पाठ सीखने को मिला है वह यह है कि हर किसी के समक्ष यह बात स्पष्ट हो जानी चाहिए कि युद्ध की आग पूरे विश्व को लीलने की शक्ति रखती है जबकि शांति की किरणें पूरे विश्व को प्रकाशित कर सकती हैं। एक मृत्यु है और दूसरा जीवन, एक विनाश है और दूसरी अमरता, एक महान आपदा है और दूसरी है महानतम कृपा। युद्ध अंधकार है जबकि शांति प्रकाश है, युद्ध असीम अधोगति है और शांति अनन्त गरिमा, युद्ध मनुष्य की आधारशिला को ही नष्ट कर देने वाला है और शांति मानवजाति की समृद्धि की संस्थापक है।

21. अतः, उपरोक्त परिस्थितियों के अनुरूप अनेक लोग उठ खड़े हो सकते हैं और सक्रिय हो सकते हैं, और वे शीघ्रातिशीघ्र दुनिया के अनेक हिस्सों की यात्राओं पर जा सकते हैं - खासतौर पर अमेरिका से यूरोप, अफ्रीका, एशिया और ऑस्ट्रेलेशिया की ओर। और वे जापान एवं चीन की यात्रा कर सकते हैं। इसी

तरह, जर्मनी से शिक्षक एवं धर्मानुयायी अमेरिका, अफ्रीका, जापान और चीन जैसे प्रायद्वीपों का भ्रमण कर सकते हैं। संक्षेप में कहें तो वे धरती के सभी द्वीपों-महाद्वीपों की यात्राएँ कर सकते हैं। इस प्रकार बहुत ही कम समय में अनेक अद्‌भुत परिणाम सामने आएँगे, विश्व-शांति की ध्वजा संसार के शिखर पर फहराती नजर आएगी तथा मानव-जगत की एकता का प्रकाश पूरे विश्व को प्रकाशित कर सकता है।

22. संक्षेप में, हे ईश्वर में आस्था रखने वालों! दिव्य ग्रंथ का पाठ यह हैः यदि दो लोग किसी दिव्य प्रश्न के सम्बंध में झगड़ा और विवाद कर रहे हों, उनमें मतभेद और संघर्ष हो तो वे दोनों ही गलत हैं। ईश्वर के इस अकाट्य विधान के पीछे यह विवेक है कि ईश्वर के धर्मानुयायियों में से किन्हीं भी दो लोगों के बीच कोई विवाद या मतभेद उत्पन्न न हो सके, कि वे दोनों एक-दूसरे के साथ असीम प्रेम और सौहार्द के साथ बात करें। यदि उनके बीच विवाद का लेश मात्र भी प्रकट हो तो उन्हें चुप हो जाना चाहिए और दोनों ही पक्षों को अपना वाद-विवाद वहीं रोक देना चाहिए और उस प्रश्न के सत्य के सम्बंध में 'व्याख्याकार' से पूछना चाहिए। यह अकाट्य आदेश है।

23. आप पर बहा का प्रकाश विराजे!

24. प्रार्थना

हे ईश्वर, मेरे परमेश्वर! देखता है तू कि किस तरह सारे प्रदेश घनघोर अंधकार के साये में हैं, किस तरह सभी देश विभेद की लपटों में जल रहे हैं, और युद्ध एवं रक्तपात की आग की लपटें समस्त पूर्व और पश्चिम में प्रज्ज्वलित हो उठी हैं। खून बह रहा है, जमीन मुर्दों से पटी पड़ी है और धड़ से अलग पड़े मुंड युद्धभूमि की धूल में गिरे पड़े हैं।

हे प्रभो! इन अज्ञानियों पर दया कर और उन पर अपनी क्षमाशीलता भरी दृष्टि डाल। इस आग को बुझा, ताकि क्षितिज को ढँक देने वाले बादल तितर-बितर हो सकें, मित्रता की किरणों के साथ यथार्थ का सूर्य अपनी चमक बिखेर सके, यह गहन अंधकार छँट सके तथा शांति का प्रखर प्रकाश सभी देशों पर अपनी कांति बिखेर सके।

हे ईश्वर! लोगों को घृणा और शत्रुता के इस अथाह प्रवाह से बाहर निकाल और उन्हें इस अभेद्य अंधकार से मुक्त कर। उनके हृदयों को मिलाकर एक कर और उनकी आँखों को शांति और मैत्री के प्रकाश से प्रदीप्त कर। उन्हें युद्ध और रक्तपात

के गहन गर्त से बाहर कर और भ्रम के अंधकार से मुक्त कर। उनकी आँखों के आगे से पर्दा हटा और मार्गदर्शन के प्रकाश से उनके हृदयों को ज्योतिर्मय कर। अपनी मृदुल करुणा और दया के साथ उनसे बर्ताव कर, उनसे अपने न्याय और क्रोध के अनुरूप व्यवहार न कर जिससे परम शक्तिशाली जनों के भी अंग-प्रत्यंग सिहर उठते हैं।

हे परमेश्वर! युद्ध अनवरत जारी हैं। संकट और चिन्ता की स्थिति और अधिक गहरा उठी है और समृद्धि से लहलहाने वाला हर भूभाग विनष्ट हो चुका है।

हे ईश्वर! हृदय भारी हो चुके हैं और आत्माएँ घोर पीड़ा के दौर में हैं। इन बेचारी आत्माओं पर दया कर और उन्हें उनकी अत्यधिक लालसाओं के सहारे न छोड़।

हे परमेश्वर! अपनी भूमि पर विनम्र और समर्पित लोगों को प्रकट कर, उनके मुखड़े मार्गदर्शन की किरणों से प्रकाशित हों, वे इस संसार से अनासक्त हों, तेरे नाम के गुणगान में निरत हों, तेरी स्तुति करें, और वे लोगों के बीच तेरी पवित्रता की सुरभि का प्रसार करें।

हे प्रभो! उनके मेरुदंड को सशक्त कर, उनके इरादे मजबूत कर और उनके हृदयों को अपने प्रेम के परम सामर्थ्यमय चिह्नों से आनंदित कर।

हे प्रभो! वे दुर्बल हैं, और तू शक्तिशाली एवं सामर्थ्यमय है। वे अशक्त हैं और तू सहायक है, कृपालु है।

हे ईश्वर! विद्रोह का समुद्र उछालें मार रहा है, और ये प्रचंड आँधियां तेरी उस असीम कृपा के अलावा, जिसने सब प्रदेशों को आच्छादित कर रखा है, अन्य किसी भाँति शांत नहीं हो सकतीं।

हे स्वामी! सत्य ही, लोग प्रबल लालसाओं के गहन गर्त में हैं और तेरी असीम कृपा के सिवा और कुछ भी उनकी रक्षा नहीं कर सकता।

हे ईश्वर! इन भ्रष्ट इच्छाओं का अँधियारा दूर कर और हृदयों को अपने प्रेम के प्रदीप से ज्योतित कर जिससे शीघ्र ही सभी देश प्रकाशित हो सकें। और फिर, अपने प्रियजनों को, उन्हें जो अपनी-अपनी मातृभूमि, अपने घर-परिवार और बच्चों को छोड़कर, तेरे सौन्दर्य के प्रति प्रेम के निमित्त, तेरी सुरभि का प्रसार और तेरे संदेश की घोषणा करने, देश-देशांतरों की यात्रा पर निकल पड़े हैं, अपनी सम्पुष्टि प्रदान कर। उनके एकाकीपन में उनका सखा बन, परदेस में उनका

सहायक, उनके दुःखों को दूर करने वाला, संकट के समय उन्हें सांत्वना देने वाला। उनकी प्यास के लिए ताजगी भरा घूंट बन, उनकी व्याधियों के लिए आरोग्यकारी औषधि और उनके हृदयों की ज्वलंत उत्कट अभिलाषा के लिए मरहम।

वस्तुतः, तू है परम उदार, अपार कृपा का स्वामी, और, वस्तुतः, तू दयालु और कृपालु है।

9. उत्तर पूर्वी राज्यों के बहाइयों के नाम पाती

2 फरवरी 1917 को हाइफा स्थित अब्दुल-बहा के भवन के इस्माइल आका कक्ष में प्रकटित। संयुक्त राज्य अमेरिका के नौ उत्तरपूर्वी राज्यों - मैने, मैसाच्यूसेट्स, न्यू हैम्पशायर, रोड आइलैंड, कनेक्टिकट, वरमौंट, पेन्सिल्वेनिया, न्यू जर्सी और न्यूयॉर्क - के बहाइयों को सम्बोधित।

1. वह परमेश्वर है! हे सच्चे मित्रों!

2. एकमेव सत्य ईश्वर की दृष्टि में सभी देश एक समान हैं और सभी शहरों और गाँवों को समान दर्जा प्राप्त है। कोई भी दूसरे से विशिष्ट नहीं है। वे सब ईश्वर के ही कार्यक्षेत्र और लोगों की आत्माओं के निवास-क्षेत्र हैं। परन्तु निष्ठा और निश्चयात्मकता और दूसरे की अपेक्षाकृत प्राथमिकता के आधार पर निवासी कुछ क्षेत्रों को खास सम्मान की निगाह से देखते हैं। इनमें से कुछ देश विशिष्ट हो जाते हैं और उनका एक प्रमुख स्थान बन जाता है। उदाहरण के लिए, हालाँकि इसमें कोई दो मत नहीं कि यूरोप और अमेरिका के कुछ देश विशिष्ट प्रकार के हैं और अपनी जलवायु की उत्तमता, जल की शुद्धता, अपने पहाड़ों, मैदानों और शस्यभूमियों के आकर्षण इत्यादि के कारण अन्य देशों की तुलना में आगे हैं, फिर भी फिलिस्तीन सभी राष्ट्रों का गौरव बन गया क्योंकि अब्राहम के समय से लेकर "अवतारों की मुहर" (मुहम्मद) के आविर्भाव तक सभी पवित्र और दिव्य 'अवतार' वहाँ आकर रहे हैं, या वहाँ जाकर प्रवास किया है, या उन्होंने उस देश से होकर यात्रा की है। इसी तरह, मक्का और मदीना को भी अपार गरिमा प्राप्त है क्योंकि वहाँ प्रभु के पैगम्बर का प्रकाश चमका। इन कारणों से फिलिस्तीन और हिज़ाज अन्य देशों से विशिष्ट बन गए।

3. इसी तरह, एकमेव सत्य ईश्वर की दृष्टि में, अमेरिकी प्रायद्वीप वह भूमि है जहाँ से उस परमात्मा का प्रकाश प्रकटित होगा, जहाँ उसके धर्म के रहस्य उजागर होंगे, जहाँ सच्चरित्र लोगों का निवास होगा और स्वतंत्र लोगों का सम्मिलन होगा। अतः, वहाँ का हर हिस्सा आशीर्वादित है: लेकिन इन नौ राज्यों को निष्ठा और आश्वस्ति की विशेष कृपा प्राप्त है और इसलिए इस प्राथमिकता के कारण उन्हें आध्यात्मिक लाभ प्राप्त है। उन्हें इस कृपा का मूल्य समझना चाहिए, क्योंकि उन्हें ऐसी सद्कृपा प्राप्त है। इस परम महान अनुदान के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए उन्हें दिव्य सुरभि के प्रसार हेतु उठ खड़ा होना चाहिए ताकि कुरान के ये आशीर्वादित श्लोक चरितार्थ हो सकें: "परमात्मा स्वर्ग और धरती का प्रकाश है:

उसके प्रकाश की तुलना दीवार में बने एक आले से की जा सकती है जिसमें दीपक रखा हुआ है और वह दीपक शीशे के एक आवरण में रखा है, वह शीशा एक देदीप्यमान तारे की तरह दिखता है। वह एक “आशीर्वादित वृक्ष” के तेल से प्रकाशित है, एक ऐसे जैतून से जो न पूर्व का है न पश्चिम का, वह तेल उसे पर्याप्त प्रकाशित रखता है किन्तु कोई अग्नि उसका स्पर्श नहीं करती। यह प्रकाश ही प्रकाश है। ईश्वर जिस किसी को भी चाहेगा उसे इस प्रकाश की ओर मार्गदर्शित करेगा।”[14]

4. वह कहता हैः प्रकृति का संसार अंधकार का संसार है, क्योंकि यह हजारों विकृतियों का उद्गम है, नहीं, बल्कि यह अंधकार ही अंधकार है। प्राकृतिक जगत का प्रकाशन ‘सत्य के सूर्य’ की आभा पर आश्रित है। मार्गदर्शन की कृपा की तुलना उस मोमबत्ती से की जा सकती है जो ज्ञान और विवेक के शीशे के अन्दर प्रज्वलित हो रही है और वह ज्ञान और विवेक मानवता के हृदय का दर्पण है। उस प्रदीप्त दीप का तेल “आशीर्वादित वृक्ष” से प्राप्त है और वह तेल इतना शुद्ध है कि वह बिना रोशनी के प्रज्वलित हो सकता है। जब उस प्रकाश की प्रखरता और उस शीशे की सुस्पष्ट कांति तथा दर्पण की शुद्धता यह सब कुछ एकजुट होती है तो बस प्रकाश ही प्रकाश होता है।

5. संक्षेप में, इन नौ आशीर्वादित राज्यों में अब्दुल-बहा ने जगह-जगह की यात्राएँ कीं, उन्होंने स्वर्गिक ग्रंथों का रहस्य प्रकट किया और उनकी सुरभि का प्रसार किया। अधिकांश राज्यों में उन्होंने दिव्य ‘भवन’ की स्थापना की और धर्म-शिक्षण के द्वार खोले। इन राज्यों में उन्होंने विशुद्ध बीज बोए और आशीर्वादित वृक्ष रोपे।

6. अब ईश्वर में आस्था रखने वालों और उस सर्वदयालु परमात्मा की सेविकाओं का कर्त्तव्य है कि वे इन क्षेत्रों को सींचें और अत्यंत ऊर्जस्विता के साथ वे इन दिव्य पौधों की बागवानी में जुट जाएँ, ताकि ये बीज बढ़ें और विकसित हों, आशीर्वाद और सुख-समृद्धि साकार हो सके और अनेक समृद्ध एवं महान फसलें काटी जा सकें।

7. ईश्वर का साम्राज्य एक कृषक की तरह है जो किसी उर्वर और अनजोते खेत पर स्वामित्व रखता है। वहाँ स्वर्गिक बीज बिखेरे जाते हैं, ईश्वरीय कल्याण-भावना के मेघ उस पर अपनी बरखा बरसाते हैं और सत्य के सूर्य का प्रकाश चमकता है।

8. इन नौ राज्यों में ये सभी कृपाएँ अब विद्यमान है और पूर्ण रूप से प्रकट हैं। दिव्य 'माली' उस पवित्र भूमि से गुजरा है और प्रभु की शिक्षाओं में से उसने उस भूमि में पवित्र बीज बिखेर दिए हैं, ईश्वर के उदार अनुदानों की बरखा बरस चुकी है और सत्य के सूर्य का ताप - अर्थात दिव्य सम्पुष्टि - भी उसे पूरी प्रखरता से मिल चुकी है। मुझे आशा है कि उनमें से प्रत्येक आशीर्वादित आत्मा सिंचाई करने वाला एक विशिष्ट और अनुपम व्यक्ति सिद्ध होगा और अमेरिका के पूर्वी और पश्चिमी हिस्से एक आनन्ददायक स्वर्ग की तरह बन जाएँगे, ताकि आप सब उच्च स्वर्ग के सहचरों की यह पुकार सुन सकेंगे: "धन्य हो तुम, बारम्बार धन्य हो तुम!"

अभिवादन और प्रशस्ति हो आपकी!

9. निम्नांकित प्रार्थना प्रभुधर्म संदेशवाहकों और मित्रों द्वारा हर रोज पढ़ी जानी चाहिए:

हे दयालु प्रभो! तेरा गुणगान हो कि तूने हमें मार्गदर्शन का राजमार्ग दिखाया है, साम्राज्य का द्वार खोला है और सत्य के सूर्य के माध्यम से स्वयं को प्रकट किया है। तूने नेत्रहीनों को दृष्टि दी है, श्रवण-बाधितों को सुनने की शक्ति दी है और मृतकों को नवजीवन दिया है। तूने अकिंचन लोगों को समृद्धि दी है, दिग्भ्रमितों को राह दिखाई है, सूखे होंठों को मार्गदर्शन का जलस्रोत दिखाया है, तूने प्यास से व्याकुल मछली को यथार्थ के महासागर तक पहुँचाया है और तूने भटकते हुए पक्षियों को अपनी करुणा की गुलाब-वाटिका की ओर आमंत्रित किया है।

हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर! हम तेरे सेवक हैं और हैं तेरे दरिद्र जन, हम तुझसे दूर हैं और तेरी निकटता की कामना करते हैं। हम तेरे स्रोत के जल के प्यासे हैं, व्याधिग्रस्त हैं हम, तुझसे आरोग्य प्राप्त करने के लिए व्याकुल हैं। हम तेरे मार्ग के अनुगामी हैं और तेरी सुरभि के प्रसार के सिवा हमारा अन्य कोई लक्ष्य, हमारी अन्य कोई कामना नहीं है, ताकि हर आत्मा यह पुकार लगा सके: हे ईश्वर! "हमें सीधे मार्ग की ओर ले चल।"[15] ऐसा हो कि उनकी आँखें प्रकाश को देखने में सक्षम हो सकें और वे अज्ञान के अंधकार से मुक्त हो सकें। वे तेरे मार्गदर्शन के प्रदीप के चतुर्दिक एकत्रित हो सकें। हर व्यक्ति अपना भाग प्राप्त कर सके। हर अकिंचन तेरे रहस्यों का साझेदार बन सके।

हे सर्वशक्तिमान! हम पर अपनी करुणा की दृष्टि डाल। हमें दिव्य सम्पुष्टि प्रदान कर। हम पवित्र चेतना फूँक दे ताकि तेरी सेवा के पथ पर हमें सहायता प्राप्त हो

और हम देदीप्यमान सितारों की तरह तेरे मार्गदर्शन के प्रकाश के साथ इन क्षेत्रों में जगमगा सकें।

तू, सत्य ही, शक्तिशाली, सामथ्र्यमय है, प्रज्ञ और सब कुछ देखने वाला है।

10. दक्षिणी राज्यों के बहाइयों के नाम पाती

3 फरवरी 1917 को हाइफा में इस्माइल आका के कक्ष में प्रकटित। संयुक्त राज्य अमेरिका के सोलह दक्षिणी राज्यों - डेलावेयर, मेरीलैंड, वर्जीनिया, उत्तरी कैरोलिना, दक्षिणी कैरोलिना, जॉर्जिया, फ्लोरिडा, अलाबामा, मिसिसिपी, टैनेस, केन्टुकी, लुसिआना, आर्कान्सस, ओक्लाहोमा, और टेक्सास - के बहाइयों को सम्बोधित।

1. हे आशीर्वादित, आदरणीय आत्माओं:

2. प्राचीन युगों के दार्शनिक, मध्ययुग के विचारक और वर्तमान एवं विगत शताब्दियों के वैज्ञानिक ये सब लोग इस तथ्य से सहमत रहे हैं कि मनुष्य के रहने के लिए सर्वोत्तम और सर्वाधिक आदर्श क्षेत्र है समशीतोष्ण क्षेत्र, क्योंकि इस क्षेत्र में बुद्धि और विवेक परिपक्वता के उच्चतम चरण पर आ जाते हैं और सभ्यता की क्षमता एवं योग्यता पूर्णतः प्रस्फुटित होकर प्रकट होती हैं। जब आप इतिहास का गहन और जिज्ञासापूर्ण दृष्टि से अध्ययन करते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि अधिकांश प्रसिद्ध महापुरुषों का जन्म और पालन-पोषण समशीतोष्ण क्षेत्र में ही हुआ है और वहीं उनका कार्यक्षेत्र रहा है। अत्यंत गर्म और ठंडे भूभागों में ऐसे बहुत ही कम महापुरूष पैदा हुए हैं।

3. अमेरिका के ये सोलह दक्षिणी राज्य समशीतोष्ण क्षेत्र में स्थित हैं और इन क्षेत्रों में प्राकृतिक जगत की परिपूर्णता पूरी तरह परिलक्षित है। जलवायु की समता, परिदृश्य की सुन्दरता और देश की भौगोलिक समरूपता मस्तिष्क और विचारों के ऊपर बहुत ही गहन प्रभाव डालते हैं। निरीक्षण और अनुभव के आधार पर यह तथ्य अच्छी तरह झलकता है।

4. यहाँ तक कि पवित्र और दिव्य प्रकटावतारों को भी अत्यंत समत्वपूर्ण प्रकृति का लाभ मिला। उनका शारीरिक स्वास्थ्य और सौष्ठव अत्यंत पूर्ण था, उनकी शरीर-संरचना से शक्ति स्फूर्तित होती थी, उनकी ऊर्जा सुव्यवस्थित रूप से कार्य करती थी और बाह्य अनुभूतियाँ आंतरिक बोध से युक्त थीं और वे असाधारण गतिशीलता एवं संयोजन के साथ काम करते थे।

5. अतः अन्य राज्यों के करीब होने तथा उनकी जलवायु अत्यंत सम होने के कारण निस्संदेह इन सोलह राज्यों में दिव्य शिक्षाएँ अत्यंत प्रखरता के साथ प्रकट होनी चाहिए, पवित्र चेतना की साँसें अत्यंत गहनता के साथ प्रस्फुटित होनी चाहिए, ईश्वरीय प्रेम का महासागर उत्ताल तरंगित होना चाहिए, दिव्य प्रेम की गुलाब-

वाटिका का समीरण प्रबल वेग से संचरित होना चाहिए और पावनता की सुरभियाँ तीव्र एवं त्वरित गति से प्रसारित होनी चाहिए।

6. ईश्वर का गुणगान हो कि दिव्य कृपाएँ असीम हैं, ईश्वरीय सिद्धान्तों की मधुरता अत्यंत प्रभावपूर्ण है, परम महान 'वृत्त' पूर्ण प्रखरता के साथ चमक रहा है, परमोच्च दरबार के सहचर अजेय शक्ति के साथ आक्रमण कर रहे हैं, वाणी तलवार से भी अधिक तीक्ष्ण है, हृदय विद्युत के प्रकाश से भी अधिक दीप्तिमान हैं, मित्रों की उदारता पिछली और सभी अनुक्रमिक पीढियों की उदारता से भी बढकर है, आत्माएँ दिव्य आकर्षण से बँधी हैं और परमात्मा के प्रेम की अग्नि प्रज्वलित है।

7. इस समय, इस घड़ी में हमें इस परम महान अवसर का लाभ उठाना चाहिए। हमें एक पल के लिए भी निष्क्रिय होकर नहीं बैठना चाहिए हमें स्वयं को चैन, आराम, शांति, साजो-सामान, धन-सम्पदा, जीवन और सभी भौतिक वस्तुओं की आसक्ति से मुक्त कर लेना चाहिए। हमें अपना सर्वस्व उस परम महिमावान, अस्तित्व के स्वामी के प्रति समर्पित कर देना चाहिए ताकि दिव्य साम्राज्य की शक्तियाँ अधिक गहनता की झलक दिखा सकें और इस नए युगचक्र में उसकी प्रखर दीप्ति विचारों और आदर्शों के संसार को प्रकाशित कर सके।

8. तेईस साल बीत चुके हैं जबकि अमेरिका में ईश्वर की सुरभियों का प्रसार किया गया था, लेकिन तब से पर्याप्त और उपयुक्त गतिविधियों का संचालन नहीं किया गया और न ही कोई बड़ी प्रशस्ति और गतिशीलता ही हासिल की गई है। अब मेरी आशा है कि स्वर्गिक शक्ति, परम कृपालु की सुगन्धों, चेतना के आकर्षण, स्वर्गिक कृपाओं और स्वर्ग के सखाओं एवं दिव्य प्रेम के प्रवाहित होते फव्वारे के माध्यम से ईश्वर के धर्मानुयायी उठ खड़े हो सकते हैं और कुछ ही समय में सर्वोत्तम शुभ प्रकट हो सकता है, सत्य का सूर्य इतनी प्रखरता से चमक सकता है कि प्राकृतिक संसार का अंधेरा बिल्कुल छिन्न-भिन्न हो जाएगा, हर कोने से अत्यंत विलक्षण मधुरता मुखरित हो उठेगी, सुबह के पंछी ऐसा मधुर गायन गुंजित करंेगे कि मानव-जगत स्फूर्त और गतिमान हो उठेगा, ठोस वस्तुएँ तरल हो जायेंगी और जो आत्माएँ कठोरतम चट्टान की तरह हैं वे अपने पंख फैला सकेंगी और ईश्वर के प्रेम से उत्पन्न ताप के प्रभाव से स्वर्ग की ओर उड़ान भर सकेंगी।

9. लगभग दो हजार साल पहले, आर्मेनिया अभेद्य अंधकार से ढँका था। ईसा मसीह के शिष्यों में से एक आशीर्वादित व्यक्ति उस भूभाग की ओर रवाना हुआ और

उसके प्रयासों के माध्यम से बहुत ही जल्द वह प्रान्त प्रकाशित हो उठा। इससे यह प्रमाणित होता है कि प्रभु-साम्राज्य की शक्ति कैसे कारगर होती है!

10. अतः, आप सर्वदयालु परमात्मा की सम्पुष्टि और 'परमोच्च' की सहायता के प्रति आश्वस्त रहें। आप इस संसार और इसके निवासियों से निस्पृह और पावन बन जाएँ, अपना इरादा सबकी भलाई करने का रखें, इस पार्थिव संसार से अपनी आसक्ति मिटा दें और चेतना के सार-तत्व की तरह आप हल्के और मृदुल बन जाएँ। और तब दृढ़ संकल्प, पवित्र हृदय, आनन्दित चेतना और प्रवाहपूर्ण वाणी के साथ अपना समय दिव्य सिद्धान्तों के प्रसार में लगाएँ ताकि मानव-जगत की एकता अमेरिका के शीर्ष पर अपना वितान तान सके और दुनिया के सभी राष्ट्र दिव्य नीति का अनुगमन कर सकें। यह असंदिग्ध है कि दिव्य नीति समस्त मानवजाति के प्रति न्याय और दया की नीति है, क्योंकि दुनिया के सभी राष्ट्र ईश्वर की भेड़ों की भाँति हैं और ईश्वर है एक दयालु गड़ेरिया। उसी ने इन भेड़ों की रचना की है। उसी ने उनकी रक्षा की है, उन्हें पोषण और प्रशिक्षण दिया है। इससे बढ़कर और क्या दयालुता हो सकती है? और, ईश्वर का गुणगान हो, हमें प्रति क्षण हजारों बार धन्यवाद देना चाहिए कि हम सभी अज्ञानपूर्ण पूर्वाग्रहों से मुक्त हो गए हैं, ईश्वर सभी भेड़ों के प्रति दयावान हैं और हमारी समग्र आशा प्रत्येक और सबकी सेवा करने की है और एक दयालु पिता की तरह सबको शिक्षित करने की है।

11. अभिवादन और प्रशस्ति हो आपकी!

12. इन राज्यों के शहरों, गाँवों और कस्बों से होकर यात्रा करने वाले हर व्यक्ति को जो कि परमात्मा की सुरभि के प्रसार में निरत है, हर सुबह इस अंतरंग प्रार्थना का पाठ करना चाहिए:

हे मेरे ईश्वर! हे मेरे परमेश्वर! मुझे एक अधम और निर्बल व्यक्ति के रूप में तू देखता है मुझे, जो कि महानतम कार्य में जुटा हुआ है, जनसमूहों के बीच तेरे शब्दों को गुंजरित करने और तेरे लोगों के बीच तेरी शिक्षाओं के प्रसार के दृढ़संकल्प से भरा। यदि तू मुझे अपनी पावन चेतना की साँसों से सहायता नहीं प्रदान करेगा, अपने गरिमामय साम्राज्य के सैन्य-समूहों द्वारा विजय दिलाने में सहायक नहीं बनेगा और मुझ पर अपनी सम्पुष्टियों की वर्षा नहीं करेगा - जिसके माध्यम से एक मामूली मच्छर भी चील बन सकता है, पानी की एक बूंद नदियों और समुद्रों का रूप ले सकती है और एक कण प्रकाश-पुंजों और सूर्यों में बदल सकता है - तब तक मैं भला कैसे सफल हो सकता हूँ? हे मेरे प्रभो! मुझे अपनी

विजयी और प्रभावी शक्ति से सहायता दे, ताकि मेरी वाणी सभी लोगों के बीच तेरी स्तुति और तेरे गुणों का बखान कर सके और मेरी आत्मा तेरे प्रेम और ज्ञान की मदिरा से आप्लावित हो सके।

तू सर्वशक्तिमान है और जो भी चाहे वह करने वाला है!

11. मध्यवर्ती राज्यों के बहाइयों के नाम पाती

8 फरवरी 1917 को अक्का स्थित आबुद के मकान में बहाउल्लाह के कक्ष में प्रकटित। संयुक्त राज्य अमेरिका के बारह केन्द्रीय मध्यवर्ती राज्यों - मिशिगन, विस्कौंसिन, इलिनॉयस, इंडियाना, ओहियो, मिन्नेसोटा, आइओवा, मिसौरी, नॉर्थ डैकोटा, साउथ डैकोटा, नेब्रास्का और कैन्सास - के बहाइयों को सम्बोधित।

1. वह परमेश्वर है! हे पुराने धर्मानुयायियों एवं अंतरंग मित्रों!

2. महान कुरान में परमात्मा के ये वचन हैं: “वह जिस किसी के लिए भी चाहता है अपनी करुणा (प्रदान करने में) विशिष्ट है।”[16]

3. संयुक्त राष्ट्र के ये बारह केन्द्रीय प्रान्त अमेरिका के हृदय की तरह हैं, और हृदय मनुष्य के शरीर के सभी अंगों और अवयवों से जुड़ा होता है। यदि हृदय में शक्ति हो तो शरीर के सभी अंगों को शक्ति मिलती है, और यदि हृदय शक्तिहीन हो तो सभी शारीरिक तत्व भी दुर्बलता के शिकार हो जाते हैं।

4. ईश्वर का गुणगान हो कि ईश्वरीय सुरभि के प्रसार के आरम्भिक दिनों से ही शिकागो और इसका वातावरण एक सशक्त हृदय की तरह रहा है। अतः, दिव्य कृपा और उसके प्रभाव से इसे अनेक बातों में सम्पुष्टि प्राप्त है।

5. पहली बात: प्रभु-साम्राज्य का आह्वान अत्यंत आरम्भ में शिकागो से ही गुंजित किया गया था। यह वास्तव में एक महान कृपा है, क्योंकि आने वाली शताब्दियों और युगचक्रों में यह एक ऐसा अक्ष (धुरी) बनेगा जिसके इर्द-गिर्द शिकागो की प्रतिष्ठा परिक्रमा करेगी।

6. दूसरी बात: उस आशीर्वादित स्थल में अत्यंत दृढ़ता और स्थिरता के साथ अनेक जन ईश्वर के शब्दों के प्रसार के लिए उठ खड़े हुए थे और अभी भी, हर विचार से अपने हृदय को मुक्त और पावन बनाकर, वे ईश्वरीय शिक्षाओं के प्रसार के कार्य में जुटे हुए हैं। अतः उनकी प्रशंसा के स्वर परमोच्च दरबार से अनवरत प्रतिगुंजित हो रहे हैं।

7. तीसरी बात: अमेरिका प्रवास के दौरान अब्दुल-बहा कई बार शिकागो से होकर गुजरे और ईश्वर के सखाओं से मिले-जुले। कुछ समय के लिए वे उस शहर में रुके भी। वे दिन-रात एकमेव सत्य ईश्वर के उल्लेख में व्यस्त रहे और उन्होंने ईश्वरीय साम्राज्य की ओर लोगों का आह्वान किया।

8. चौथी बात: वर्तमान समय तक, हर गतिविधि की शुरुआत शिकागो से ही हुई है। उसका प्रभाव सभी क्षेत्रों और सभी दिशाओं में हुआ, ठीक उसी तरह जैसे कि हृदय में उभरने और प्रकट होने वाली हर बात शरीर के अंग-प्रत्यंग को प्रभावित कर देती है।

9. पाँचवीं बात: अमेरिका का पहला मशरिकुल-अश्कार (बहाई उपासना मन्दिर) शिकागो में ही स्थित है। यह प्रतिष्ठा और विशिष्टता असीम रूप से मूल्यवान है। इसमें कोई संदेह नहीं कि इस मशरिकुल-अश्कार से हजारों अन्य मशरिकुल-अश्कार उत्पन्न होंगे।

10. इसी तरह शिकागो में सामान्य वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न हुए, पुस्तकों और पातियों के प्रकाशन और अमेरिका के विभिन्न हिस्सों में उनके वितरण के लिए ‘‘स्टार ऑफ दि वेस्ट” स्थापित हुआ और अब ईश्वरीय साम्राज्य की स्थापना की स्वर्ण जयन्ती के आयोजन की तैयारियाँ हो रही हैं। मुझे आशा है कि यह स्वर्ण जयन्ती और इसका समारोह अत्यंत परिपूर्णता के साथ मनाया जाएगा ताकि एकता के लिए विश्व को किया गया यह आह्वान सुनाया जा सके कि “उस एकमेव सत्य ईश्वर के सिवा अन्य कोई परमेश्वर नहीं है और आदिकाल से लेकर अवतारों की मुहर (मुहम्मद) तक सभी ईश्वरीय संदेशवाहक उसी एकमेव प्रभु की ओर से भेजे गए थे”, मानव-जगत की एकता की ध्वजा फहराई जा सके, विश्व शांति का मधुर संदेश पूरब और पश्चिम के कानों तक गूँज सके, सभी मार्ग प्रशस्त और समतल किए जा सकें, सभी हृदयों को ईश्वरीय साम्राज्य की ओर आकर्षित किया जा सके, एकता का वितान अमेरिका के शीर्ष पर ताना जा सके, ईश्वर के प्रेम का गायन सभी राष्ट्रों और लोगों को आनन्द विभोर कर सके, यह धरती अनन्त स्वर्ग बन सके, अंधकार के बादल छँट सकें और सत्य का सूर्य अत्यंत प्रखरता से प्रभासित हो सके।

11. हे ईश्वर के मित्रों! आप पूरे हृदय-प्राण से प्रयास करें ताकि लोगों के दिलों के बीच सहयोग, प्रेम, एकता और सहमति की स्थापना हो सके, सबके उद्देश्य एक हो जाएँ, सभी गान एक गान बन जाएँ और पवित्र चेतना की शक्ति इतनी अधिक विजयी बन जाए कि वह प्रकृति-जगत की हर शक्ति को पराजित कर सके। प्रयास करें, आपका मिशन अकथनीय रूप से गौरवमय है। यदि आपके प्रयासों में सफलता मिली तो, निस्संदेह, अमेरिका एक ऐसे केन्द्र के रूप में उभरेगा जहाँ से

आध्यात्मिक शक्तियों की तरंगें उत्पन्न होंगी और ईश्वरीय साम्राज्य का सिंहासन अपनी अपार भव्यता एवं गरिमा के साथ सुदृढ़ रूप से स्थापित हो जाएगा।

12. यह गोचर जगत एक क्षण के लिए भी अपरिवर्तनशील नहीं रह सकता। यह प्रतिक्षण परिवर्तित और रूपांतरित होता चलता है। एकदिन हर आधार डगमगा जाएगा, अंततः हर गरिमा और हर प्रभा बुझकर ओझल हो जाएगी, परन्तु प्रभु-साम्राज्य अनन्त है और स्वर्गिक सम्प्रभुता एवं महिमा सुदृढ़ और शाश्वत रूप से स्थापित रहेगी। अतः विवेकी पुरुष की दृष्टि में ईश्वरीय साम्राज्य की एक चटाई भी संसार की सत्ता के सिंहासन से कहीं श्रेयस्कर है।

13. मेरे आँख-कान सतत रूप से इन मध्य राज्यों की ओर केन्द्रित हैं कि कदाचित किन्हीं आशीर्वादित आत्माओं से मेरे कानों तक कोई मधुर स्वर में पहुँच सके - उन आत्माओं से जो ईश्वरीय प्रेम के उदय-स्थल और पावनता व पवित्रता के क्षितिज के सितारे हैं - वे आत्माएँ जो इस अंधेरे जगत को प्रकाशित कर देंगी और इस मृतप्राय विश्व को जीवन की स्फूर्ति से भर देंगी। अब्दुल-बहा का आनन्द इसी बात पर आश्रित है! मेरी आशा है कि आपको इसमें सम्पुष्टि प्राप्त होगी।

14. अंततः, वे आत्माएँ जो अत्यंत निस्पृहता की स्थिति में हैं, जो प्राकृतिक जगत की खामियों से मुक्त और पावन हैं, इस संसार के प्रति अनासक्त, अनन्त जीवन की साँसों से जीवन्त हैं - जो प्रकाशित हृदय से सम्पन्न, स्वर्गिक चेतना से युक्त, चेतना के आकर्षण से समृद्ध, स्वर्गिक उदारता, प्रवाहपूर्ण वाणी और सुस्पष्ट व्याख्या के गुणों से भरी हुई हैं - ऐसी आत्माओं को चाहिए कि वे इन केन्द्रीय राज्यों के सभी क्षेत्रों में शीघ्र यात्राएँ करें। उन्हें चाहिए कि प्रत्येक नगर और गाँवों में वे दिव्य शिक्षाओं और नसीहतों के प्रचार-प्रसार में जुट जाएँ, लोगों को मार्गदर्शन दें और मानव-जगत की एकता का विकास करें। उन्हें चाहिए कि वे अंतर्राष्ट्रीय सद्भाव का मधुर गायन इतनी प्रवीणता से गाएँ कि न सुन सकने वाला भी सुन सके, हर हताश व्यक्ति प्रदीप्त हो उठे, हर मृतप्राय: नवजीवन पा सके और हर उदासीन आत्मा आनन्दातिरेक से भर जाए। निस्संदेह यही चरम स्थिति होगी।

15. ईश्वर की सुरभि का प्रसार करने वाले व्यक्तियों को हर सुबह इस प्रार्थना का पाठ करना चाहिए:

हे ईश्वर, मेरे परमेश्वर! तेरा गुणगान और धन्यवाद हो कि तूने मुझे अपने साम्राज्य के राजमार्ग की ओर मार्गदर्शित किया है, मुझे इस सीधे और लम्बे पथ पर चलने योग्य बनाया है, अपनी आभा के दर्शन से मेरे नेत्रों को प्रकाशित किया

है, मेरे कानों को रहस्य-साम्राज्य के पावन पक्षियों के मधुर कलरव की ओर केन्द्रित किया है और मेरे हृदय को सदाचारी लोगों के बीच अपने प्रेम से आकर्षित किया है।

हे प्रभो! मुझे पवित्र चेतना से सम्पुष्टि प्रदान कर ताकि मैं राष्ट्रों के बीच तेरे नाम का उद्घोष कर सकूँ और मानवजाति के बीच तेरे साम्राज्य के प्रकटीकरण के सुसमाचार की घोषणा कर सकूँ।

हे ईश्वर! दुर्बल हूँ मैं, अपनी शक्ति और क्षमता से मुझे सशक्त कर। मेरी वाणी लड़खड़ाती है, मुझे अपना सुमिरन और अपनी स्तुति करने योग्य बना। मैं अधम हूँ, अपने साम्राज्य में प्रवेश देकर मेरा मान रख। मैं तुझसे दूर हूँ, मुझे अपनी दयालुता की दहलीज के पास आने दे। हे ईश्वर! मुझे एक प्रकाशित हृदय दे, एक देदीप्यमान सितारा और फलों से सुसज्जित एक आशीर्वादित वृक्ष जिसकी शाखाएँ इन समस्त क्षेत्रों को आच्छादित करें। तू, वस्तुतः, सामर्थ्यवान, शक्तिशाली और अप्रतिबंधित है।

12. पश्चिमी राज्यों के बहाइयों के नाम पाती

15 फरवरी 1917 को अक्का स्थित आबुद के मकान में बहाउल्लाह के कक्ष में प्रकटित। संयुक्त राज्य अमेरिका के ग्यारह पश्चिमी राज्यों - न्यू मैक्सिको, कोलेरैडो, अरिज़ोना, नेवाडा, कैलिफोर्निया, योमिंग, ऊटाह, मौंटाना, इडैहो, ओरेगॉन और वाशिंगटन - के बहाइयों को सम्बोधित।

1. वह परमेश्वर है! हे परम दयालु के सखाओं और सेविकाओं, प्रभु-साम्राज्य के चुने हुए जनों!

2. कैलिफोर्निया का आशीर्वादित राज्य पवित्र भूमि अर्थात फिलिस्तीन से बहुत अधिक समानता रखता है। यहाँ की हवा अत्यंत सम है, मैदान विस्तीर्ण और फिलिस्तीन के फल इत्यादि भी इस राज्य में अत्यंत ताजगी और सरसता के साथ उपलब्ध हैं। जब अब्दुल-बहा उन राज्यों की यात्रा कर रहे थे और वहाँ से गुजर रहे थे तो उन्हें लगा कि वे फिलिस्तीन पहुँच गए हैं, क्योंकि हर दृष्टिकोण से उस प्रदेश और उस राज्य में बिल्कुल समानता है। यहाँ तक कि कुछ मामलों में प्रशान्त महासागर के तट भी पवित्र भूमि के समुद्र-तट से पूर्ण सादृश्य रखते हैं और पवित्र भूमि के फूल-पौधे भी उन समुद्र-तटों पर उग आए हैं जिसे देखकर काफी विस्मय हुआ।

3. इसी तरह, कैलिफोर्निया एवं अन्य पश्चिमी राज्यों में प्रकृति-जगत के एक से एक अद्भुत दृश्य प्रकट हैं जो कि लोगों के मनो-मस्तिष्क को आश्चर्य से भर देते हैं। चारों ओर ऊँचे-ऊँचे पहाड़, गहरी घाटियाँ, बड़े-बड़े शानदार जलप्रपात और विशालकाय वृक्ष दिखाई पड़ते हैं और यहाँ की मिट्टी अत्यंत समृद्ध और उर्वर है। यह आशीर्वादित राज्य पवित्र भूमि की तरह है और वह प्रदेश और वह देश एक आनन्ददायक स्वर्ग की तरह। यह कई तरह से फिलिस्तीन जैसा है। अब जैसे ये प्राकृतिक समानताएँ विद्यमान हैं वैसे ही स्वर्गिक समानताएँ भी प्राप्त की जानी चाहिए।

4. फिलिस्तीन में दिव्य संकेतों के प्रकाश प्रकट हैं। इजरायल के ज्यादातर अवतारों ने इस पवित्र स्थल पर ईश्वर के साम्राज्य की पुकार बुलन्द की। आध्यात्मिक शिक्षाओं के प्रसार के बाद, आध्यात्मिक चेतना वाले लोगों की नासिका सुगन्ध से भर गई है, प्रकाशित जनों की आँखें आलोकित हो उठी हैं, कान इस संगीत से विभोर हो गए, ईश्वरीय साम्राज्य की आत्मा को आह्लादित कर देने वाली बयारों से दिलों को नवजीवन प्राप्त हुआ और सत्य के सूर्य की प्रभा से उन्हें अत्युत्तम

प्रकाश मिला है। उसके बाद इस क्षेत्र से यूरोप, अमेरिका, एशिया, अफ्रीका और ऑस्ट्रेलेशिया को भी रोशनी मिली।

5. अब कैलिफोर्निया एवं अन्य पश्चिमी राज्यों को चाहिए कि वे पवित्र भूमि से आदर्श की समानता प्राप्त करें और उस राज्य तथा उस प्रदेश से पवित्र चेतना की सुगन्ध अमेरिका और यूरोप के सभी भागों में फैलनी चाहिए, ताकि ईश्वरीय साम्राज्य का आह्वान सभी के कानों को आनन्दातिरेक से भर सके, दिव्य सिद्धान्त नए जीवन का संचार कर सकें, विभिन्न समुदाय एक समुदाय बन जाएँ, विभिन्न विचारों का लोप होकर वे एक विलक्षण केन्द्र के इर्द-गिर्द चक्कर काटें, पूर्वी और पश्चिमी अमेरिका एक-दूसरे को गले लगाएँ, मानव-जगत की एकता का गान सभी मानव-सन्तानों को नया जीवन प्रदान करे और विश्व शांति का वितान अमेरिका के शिखर पर ताना जा सके। इस प्रकार, यूरोप और अफ्रीका पवित्र चेतना की साँसों से जीवन्त हो सकें, यह दुनिया एक दूसरी ही दुनिया बन जाए, सम्पूर्ण राष्ट्र एक नया आनन्द प्राप्त कर सकें, और जैसे कैलिफोर्निया एवं अन्य पश्चिमी राज्यों में प्राकृतिक जगत के अद्भुत दृश्य विद्यमान हैं वैसे ही वहाँ ईश्वरीय साम्राज्य के महान संकेत भी प्रकट हों ताकि शरीर और चेतना में समरूपता आ जाए, बाहरी विश्व आंतरिक विश्व का प्रतीक बन जाए और धरती का दर्पण प्रभु-साम्राज्य का वह दर्पण बन जाए जिसमें आदर्श स्वर्गिक गुणों की झलक दिखती हो।

6. उन हिस्सों में मेरी यात्राओं के दौरान, मैंने बहुत ही सुन्दर दृश्य देखे, प्रकृति के रमणीक परिदृश्य, सुन्दर बाग एवं नदियाँ, राष्ट्रीय उद्यान एवं संगम-स्थल, रेगिस्तान, मैदान, चारागाह एवं शस्य-भूमियाँ और उस क्षेत्र के अनाज और फल-फूल इत्यादि ने मुझे बहुत ही आकर्षित किया, यहाँ तक कि अभी भी उनकी स्मृतियाँ जीवन्त हैं।

7. मुझे खासतौर पर सैन फ्रांसिस्को और ओकलैंड के सम्मिलनों, लॉस ऐंजेल्स की सभाओं और उन अनुयायियों से मिलकर बहुत खुशी हुई जो अन्य राज्यों के शहरों से आए थे। जब कभी उनके चेहरे मेरी स्मृति में कौंध जाते हैं, तुरन्त ही अपार खुशी महसूस होती है।

8. अतः, मैं आशा करता हूँ कि दिव्य शिक्षाएँ सूर्य की किरणों की तरह सभी पश्चिमी राज्यों में फैल जाएँ और कुरान की यह पवित्र आयत चरितार्थ हो सके: "यह एक

अच्छी नगरी है और ईश्वर क्षमाशील हैं!"[17] इसी तरह, कुरान की इन अन्य आयतों का महत्व भी अत्यंत प्रखरता के साथ उजागर हो सके: "क्या तुम भूभाग की यात्रा नहीं करते?"[18] एवं "ईश्वर की करुणा के संकेत तो देखो!"[19]

9. ईश्वर का गुणगान हो कि स्वर्गिक कृपा और मंगल भावना के माध्यम से, उस प्रदेश में सेवा का एक विस्तृत क्षेत्र उपलब्ध है, लोगों के मानस अत्यंत मेधावी एवं प्रगतिशील हैं, विज्ञान और कला का विकास हो रहा है, हृदय दर्पण की तरह पवित्र और स्पष्ट हैं और ईश्वर के मित्रगण पूर्णतः आकर्षित। अतः यह आशा की जाती है कि धर्म-शिक्षण सम्बन्धी सभाएँ सुगठित एवं संस्थापित की जाएँगी तथा ईश्वर की सुरभियों के प्रसार के लिए विवेकी शिक्षकों को शहरों और गाँवों में भेजा जाएगा।

10. प्रभुधर्म के शिक्षकों को स्वर्गिक, ईश्वरीय और प्रभावान होना चाहिए। उन्हें चेतना का जीवन्त रूप, बुद्धिमत्ता का साकार स्वरूप होना चाहिए और उन्हें अत्यंत दृढ़ता, धैर्य और आत्मत्याग की भावना के साथ सेवा के लिए उठ खड़ा होना चाहिए। अपनी यात्राओ के दौरान उन्हें कपड़े और खान-पान जैसी चीजों के प्रति आसक्त नहीं होना चाहिए। उन्हें चाहिए कि वे अपने विचारों को परमात्मा के साम्राज्य की उदार कृपाओं पर केन्द्रित करें और पवित्र चेतना की सम्पुष्टि की याचना करें। दिव्य शक्ति से सम्बलित होकर, चेतना के आकर्षण से, स्वर्गिक सुसमाचार और पावनता लेकर उन्हें आभा-स्वर्ग की सुरभियों से अपने नासिका-रंध्रों को भर लेना चाहिए।

11. उन्हें प्रतिदिन इस प्रार्थना का पाठ करना चाहिए:

हे ईश्वर, मेरे परमेश्वर!

यह एक पंख टूटा पंछी है, इसकी उड़ान बड़ी धीमी है - सहायता कर इसकी कि यह समृद्धि और मुक्ति के सर्वोच्च शिखर की ओर उड़ान भर सके, अपने पथ पर अत्यधिक उल्लास और प्रसन्नता के साथ उस अनन्त अंतरिक्ष में सर्वत्र विचरण कर सके, तेरे सर्वोपरि नाम पर अपने मधुर गीत सभी क्षेत्रों में गुंजरित कर सके, कानों को इसकी पुकार से आनन्दित कर सके और नेत्रों को मार्गदर्शन के चिह्नों का दर्शन कर उज्ज्वल कर पाए।

हे प्रभो! मैं एकाकी, अकेला और अधम हूँ। मेरे लिए तेरे अतिरिक्त अन्य कोई सहायक नहीं और तेरे सिवा अन्य कोई अवलंबनदाता नहीं। मुझे अपनी सेवा में

संपुष्ट कर, मुझे अपने देवदूतों के समूह से सहायता दे, मुझे तेरी वाणी की अभिवृद्धि में विजयी बना और तेरे प्राणियों के बीच मेरे द्वारा तेरी प्रज्ञा का बखान होने दे। तू दुर्बलों का सहायक और क्षुद्रों का रक्षाकर्ता है। निश्चय ही तू शक्तिशाली, समर्थ और अबाधित है।

13. कनाडा और ग्रीनलैंड के बहाइयों के नाम पाती

21 फरवरी 1917 को अक्का स्थित आबुद के मकान में बहाउल्लाह के कक्ष में प्रकटित। कनाडा - न्यूफाउंडलैंड, प्रिंस एडवर्ड आइलैंड, नॉवा स्कॉटिया, न्यू ब्रंसविक, क्वीबेक, सैस्कैट्सेवेन, मैनिटोबा, औंटारियो, अल्बर्टा, ब्रिटिश कोलंबिया, युकॉन, मैकेंज़ी, कीवैटिन, युंगावा, फ्रैंकलिन आइलैंड्स - और ग्रीनलैंड के बहाइयों को सम्बोधित।

1. वह परमेश्वर है! हे दयालु मित्रों और परम दयालु की सेविकाओं!

2. कुरान में परमात्मा के वचन हैं: "ईश्वर की रचनाओं के बीच तुम्हें कोई अन्तर नहीं दिखेगा।"[20] दूसरे शब्दों में, ईश्वर का कथन यह है कि आदर्श दृष्टिकोण से ईश्वर की रचनाओं के बीच विभिन्नता नहीं है क्योंकि सबकी रचना ईश्वर ने ही की है। उपरोक्त आधार पर, यह निष्कर्ष निकलता है कि देशों के बीच भी कोई अन्तर नहीं है। परन्तु कनाडा साम्राज्य का भविष्य बहुत ही महान है और उससे जुड़ी हुई घटनाएँ अत्यंत गौरवमय। इस पर दिव्य मंगल-भावना की दृष्टि पड़ेगी और वह सर्व-गरिमावान प्रभु की कृपाओं की झलक दिखाएगा।

3. इस साम्राज्य की यात्राओं और अपने प्रवास के दौरान अब्दुल-बहा को अपार आनन्द प्राप्त हुआ था। मेरे प्रस्थान से पहले बहुत से लोगों ने यह कहते हुए मुझे मौन्ट्रियल की यात्रा न करने की चेतावनी दी थी कि वहाँ के ज्यादातर लोग कैथोलिक हैं और काफी कट्टर हैं। वे घोर अंधानुकरण में निमग्न हैं और प्रभु-साम्राज्य की पुकार की ओर ध्यान देने की क्षमता उनमें है ही नहीं। कट्टरपन के पर्दे ने उनकी आँखों पर ऐसी पट्टी बाँध दी है कि उन्होंने परम महान मार्गदर्शन से स्वयं को वंचित कर रखा है और कट्टर विचारों ने पूरी तरह उनके हृदय पर कब्जा जमा रखा है। सत्य के लिए उनके हृदय में कोई जगह ही नहीं बची। उन्होंने जोर देकर कहा कि यदि सत्य का सूर्य पूर्ण प्रखरता के साथ भी उस समस्त साम्राज्य में चमक उठे तो भी अंधविश्वासों के अभेद्य बादलों ने उसके क्षितिज को इस तरह ढँक रखा है कि उसकी किरणों को देख पाना हर किसी के लिए असंभव ही होगा।

4. लेकिन अब्दुल-बहा के संकल्प पर इन बातों का कोई असर नहीं पड़ा। ईश्वर पर अपना विश्वास रखे हुए, उन्होंने मौंट्रियल की ओर रुख किया। जब वे उस शहर में पहुँचे तो उन्हें सारे दरवाजे खुले मिले। उन्होंने पाया कि लोगों के हृदय अत्यंत ग्रहणशील हैं और ईश्वरीय साम्राज्य की आदर्श शक्ति सभी विघ्न-बाधाओं को दूर किए जा रही है। गिरजाघरों और उस साम्राज्य में अपनी सभाओं के दौरान, उन्होंने अत्यंत आह्लादपूर्वक प्रभु-साम्राज्य की ओर लोगों का आह्वान किया और

ऐसे बीज बिखेरे जिन्हें दिव्य शक्ति के हाथों सींचा जाएगा। निस्संदेह, ये बीज विकसित और हरे-भरे होंगे और एक से एक समृद्ध फसलें काटी जाएँगी। दिव्य सिद्धान्तों के प्रसार कार्य में उन्हें किसी भी विरोध या शत्रुता का सामना नहीं करना पड़ा। जिन आस्थावानों से उस शहर में उन्होंने मुलाकात की वे अत्यंत आध्यात्मिक और ईश्वरीय सुरभि से आकर्षित थे। उन्होंने पाया कि ईश्वर की सेविका श्रीमती मैक्सवेल के प्रयासों से उस साम्राज्य में ईश्वरीय साम्राज्य के अनेक पुत्रों और पुत्रियों को एकजुट किया गया था और वे एक-दूसरे के साथ मिले-जुले थे जिससे उनका आनन्द दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा था। उनके प्रवास की अवधि सीमित थी परन्तु भविष्य के परिणाम अनगिनत होने वाले थे। जब कोई किसान किसी अनजोते खेत का स्वामी बनता है तो कुछ ही दिनों में एक विशाल खेत पर उसकी फसलें लहलहा उठती हैं। अतः मुझे आशा है कि आने वाले समय में मौंट्रियल इतना आंदोलित हो उठेगा कि उस साम्राज्य से प्रभु-साम्राज्य का माधुर्य दुनिया के हर हिस्से में फैल जाएगा और पवित्र चेतना की साँसें उस केन्द्र से अमेरिका के पूरब और पश्चिम तक प्रसारित हो जाएँगी।

5. हे ईश्वर में आस्था रखने वालों! अपनी संख्या कम होने की चिन्ता मत करो और न ही अनास्थावान संसार की विशालता देखकर ही उत्पीड़ित हो। गेहूँ के पाँच दाने भी स्वर्गिक कृपा से सम्पन्न होंगे जबकि हजारों टन के बोझ भी कोई प्रभाव या परिणाम उत्पन्न न कर पायेगा। समाज के जीवन के लिए, एक फलदार वृक्ष भी लाभदायक होगा जबकि पेड़ों का एक सम्पूर्ण जंगल भी कोई फल उत्पन्न नहीं कर सकेगा। मैदानों में कंकड़ों की कोई कमी नहीं होती लेकिन बेशकीमती रत्न दुर्लभ होते हैं। बालू के हजारों बियावानों के मुकाबले एक मोती कहीं बेहतर होता है, खासतौर पर जब वह दिव्य आशीर्वादों से युक्त बेशकीमती मोती हो। बहुत ही शीघ्र उससे हजारों अन्य मोती पैदा होंगे। जब वह मोती बालू के कणों के साथ मिल जाता है तो वे भी मोती बन जाते हैं।

6. मैं पुनः कहता हूँ कि भौतिक दृष्टिकोण से देखें या आध्यात्मिक दृष्टिकोण से, कनाडा का भविष्य बहुत ही महान है। दिन-प्रतिदिन उसकी सभ्यता और स्वतंत्रता बढ़ती जाएगी। ईश्वरीय साम्राज्य के बादल वहाँ बोए गए मार्गदर्शन के बीजों को सिंचित करेंगे। अतः, आप रुकें नहीं, चैन की साँस लेने की कामना न करें, स्वयं को इस क्षणभंगुर संसार की विलासिताओं के प्रति आसक्त न करें, स्वयं को हर आसक्ति से मुक्त कर लें और पूरे प्राणपण से परमात्मा के साम्राज्य में स्थापित होने का प्रयास करें। आप स्वर्गिक खजानों को प्राप्त करें। दिन-प्रतिदिन आप अधिक से अधिक प्रकाशित होते चले जाएँ। एकता की दहलीज के आप करीब-से-करीब पहुँचते चलें। आप आध्यात्मिक कृपाओं की झलक दिखाने वाले व्यक्ति और अनन्त प्रभाओं के उदय-स्थल बनें। यदि सम्भव हो तो कनाडा के अन्य

भागों में धर्म-शिक्षकों को भेजें। इसी तरह, ग्रीनलैंड और एस्किमो लोगों के पास भी शिक्षकों को भेजें।

7. जहाँ तक शिक्षकों का सवाल है, उन्हें पुराने वस्त्रों का सर्वथा परित्याग कर देना चाहिए और नया परिधान धारण कर लेना चाहिए। ईसा मसीह के कथनों के अनुसार, उन्हें नया जन्म लेने की स्थिति हासिल करनी चाहिए - अर्थात प्रथम घटनाक्रम में उनका जन्म अपनी माँ की कोख से हुआ था, लेकिन इस बार उनका जन्म प्रकृति-जगत के गर्भ से होना चाहिए। जैसे अब उन्हें भ्रूण जगत के अनुभवों का ज्ञान नहीं है वैसे ही उन्हें प्रकृति-जगत की खामियों को भी पूरी तरह भुला देना चाहिए। जीवन के जल, ईश्वरीय प्रेम की अग्नि और पवित्र चेतना की साँसों से उनका पवित्रीकरण होना चाहिए। उन्हें कम भोजन से ही संतुष्ट रहना चाहिए लेकिन स्वर्गिक मेज से अपना अंश बहुतायत से ग्रहण करना चाहिए। उन्हें लोभ-लालच से स्वयं को मुक्त कर लेना चाहिए और चेतना से भर जाना चाहिए। अपने पवित्र श्वास के प्रभाव से उन्हें पत्थर को भी चमकीले नीलम में बदल देना चाहिए और मामूली सीपी को एक मोती में। बासन्ती बादल की फुहारों की तरह उन्हें गँदली मिट्टी को एक गुलाब-वाटिका और उपवन में बदल देना चाहिए। वे नेत्रहीनों को दृष्टि देने, श्रवण-बाधितों को सुनने की शक्ति देने और मुरझाए प्राणियों को दीप्तिमान बनाने और मृतप्राय को स्फूर्त बनाने में सक्षम बनें।

8. अभिवादन और प्रशस्ति हो आपकी!

9. स्तुति हो तेरी, हे मेरे ईश्वर! ये तेरे वे सेवक हैं जो तेरी दयामयता के सौरभों की ओर आकर्षित हुए हैं, जो तेरी एकता के तरुवर से प्रज्वलित अग्नि से प्रदीप्त हुए हैं और जिनके नेत्र तेरी एकता के सिनाई पर्वत पर जगमगाती ज्योति के प्रभा-पुंजों से उज्ज्वल हो उठे हैं।

10. हे प्रभो! इनकी जिह्वाओं को जड़ता से मुक्त कर कि ये तेरे जनों के बीच तेरा उल्लेख कर सकें, इन्हें अपने अनुग्रह और अपनी स्नेहमयी कृपालुता से अपनी स्तुति करने दे, इन्हें अपने देवदूतों के समूहों द्वारा सहायता दिला, इनको अपनी सेवा में कटिबद्ध कर और इन्हें अपने समूहों के बीच अपने मार्गदर्शन के चिह्न बना।

11. निश्चय ही तू सर्वशक्तिमय, परम उदात्त, सदा क्षमाशील, सर्वदयामय है।

12. ईश्वर की सुरभियों का प्रसार करने वालों को हर सुबह इस प्रार्थना का पाठ करना चाहिए:

हे ईश्वर, मेरे परमात्मन! देखता है तू दिव्य शक्ति की याचना करते हुए इस निर्बल जन को, तेरी स्वर्गीय निधियों के लिए लालसा से ललकते इस दरिद्र जन को, चिरंतन जीवन के निर्झर-स्रोत को तरसते इस तृषित को, तेरी असीम दया द्वारा निर्धारित आरोग्यदान की कामना करते इस व्याधिग्रस्त को जिसे तूने अपने उस परमोच्च लोक के साम्राज्य में अपने सेवकों की नियति में विहित किया है।

हे प्रभो! मेरा तेरे अतिरिक्त अन्य कोई सहायक नहीं है। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई आश्रय नहीं, और तेरे अतिरिक्त अन्य कोई आलंबनदाता नहीं। अपने देवदूतों के द्वारा मेरी सहायता कर कि मैं तेरी पावन सुरभि को फैला सकूँ, तेरे सबसे प्रियजनों के बीच तेरी शिक्षाओं को दूर-दूर तक प्रसारित कर सकूँ।

हे मेरे नाथ! मुझे अपने अतिरिक्त अन्य सभी कुछ से अनासक्त हो जाने दे, अपनी अक्षय-सम्पदा के आँचल-छोर से दृढ़ता से चिपटा रहने दे, पूर्णतया तेरे धर्म के प्रति समर्पित होने दे, तेरे प्रेम में सुदृढ़ रहने दे और जो तूने अपने ग्रंथ में विहित किया है उसका पालन करने दे।

निश्चय ही तू शक्तिशाली, सामर्थ्यमय, सर्वशक्तिमान है।

14. संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा के बहाइयों के नाम पाती

8 मार्च 1917 को हाइफा स्थित अब्दुल-बहा के भवन में ग्रीष्मकालीन भवन (इस्माइल आका का कक्ष) में प्रकटित। संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा के बहाइयों को सम्बोधित।

1. वह परमेश्वर है! हे स्वर्गिक आत्माओं, प्रभु-साम्राज्य के पुत्र और पुत्रियों:

2. कुरान में परमात्मा का वचन है: "तूम सब लोग परमात्मा की डोर थामों और अपनी एकता न तोड़ो।"[21]

3. इस पार्थिव जगत में ऐसे कई एकताकारी केन्द्र हैं जो मानव-पुत्रों के बीच एकता और सहयोग को बढ़ावा देते हैं। उदाहरण के लिए देशभक्ति एक एकताकारी केन्द्र है, राष्ट्रीयतावाद एक एकताकारी केन्द्र है, समान अभिरुचि वाले लोगों की पहचान एक एकताकारी केन्द्र है, राजनीतिक संधि एक एकताकारी केन्द्र है, समान आदर्शों पर आधारित संघ एक एकताकारी केन्द्र है। मानव-जगत की समृद्धि इन एकताकारी केन्द्रों के सुगठन और विकास पर निर्भर है। तथापि, वास्तविक रूप से उपरोक्त सभी संस्थाएँ पदार्थ रूप में हैं, सार-तत्व के रूप में नहीं। वे आकस्मिक हैं, अनन्त नहीं - अस्थायी हैं, शाश्वत नहीं। बड़े-बड़े आंदोलनों और उथल-पुथल के सामने आने पर ये सारे समूह-केन्द्र नष्ट हो जाते हैं। परन्तु दिव्य शिक्षाओं पर आधारित संस्थाओं को रूपायित करने वाला ईश्वरीय साम्राज्य का एकताकारी केन्द्र एक शाश्वत एकताकारी केन्द्र है। यह पूर्व और पश्चिम के बीच सम्बन्धों की स्थापना करता है, मानव-जगत की एकता सुगठित करता है और मतभेदों का आधार नष्ट करता है। यह अन्य सभी एकताकारी केन्द्रों से ऊपर है और उन सबको समाहित करता है। सूर्य की किरणों की तरह, यह सभी देशों-प्रदेशों में व्याप्त अंधकार को सम्पूर्णतया छिन्न-भिन्न करता है, आदर्श जीवन प्रदान करता है और दिव्य प्रकाश की प्रखरता उत्पन्न करता है। पवित्र चेतना की साँसों द्वारा यह चमत्कार ला देता है, पूरब और पश्चिम एक-दूसरे से गले मिलते हैं, उत्तर और दक्षिण एक-दूसरे के अंतरंग सखा और सहयोगी बन जाते हैं, परस्पर विरोधी और टकरावपूर्ण विचारों का लोप हो जाता है, प्रतिरोधी लक्ष्य समाप्त हो जाते हैं, अस्तित्व के लिए संघर्ष का नियम मिट जाता है और मनुष्य की सभी प्रजातियों को अपनी छाँह प्रदान करने वाला समस्त मानव-जगत की एकता का वितान धरती के उच्चतम शिखर पर तान दिया जाता है। अतः, वास्तविक

एकताकारी केन्द्र दिव्य शिक्षाओं का समूह है जिसमें सभी अंश समाहित हैं और जो सभी विश्वव्यापी सम्बन्धों और आवश्यक मानवीय नियमों को समाहित करता है।

4. विचार कीजिए! पूर्व और पश्चिम के लोग एक-दूसरे के लिए घोर अजनबी थे और अब वे एक-दूसरे से कितने अधिक सुपरिचित और परस्पर एकता के सूत्र में बँधे हुए हैं! फारस के लोग अमेरिका के सुदूरतम देशों के कितने करीब हैं! और अब यह देखें कि ईश्वरीय शक्ति का प्रभाव कितना जोरदार रहा है, क्योंकि हजारों मील की दूरी भी मानों एक कदम मात्र की दूरी रह गई है। कैसे वे विभिन्न राष्ट्र जिनमें कोई सम्बन्ध या सादृश्य नहीं था अब एकता के सूत्र में बँध गए हैं और इस दिव्य शक्ति के माध्यम से एक-दूसरे से सहमत हैं! वस्तुतः, समस्त शक्ति अतीत में भी ईश्वर के पास ही थी और भविष्य में भी रहेगी। ईश्वर सभी वस्तुओं पर शक्तिशाली है!

5. किसी बगीचे में खिले फूलों के बारे में विचार करें। हालाँकि वे अलग-अलग किस्मों, रंग, रूप और आकार के होते हैं किन्तु वे एक ही फव्वारे के जलों से अभिसिंचित होते हैं, एक ही हवा के झोंकों से जीवन पाते हैं, एक ही सूर्य की रोशनी उनमें शक्ति भरती है। इस विविधता से उनका आकर्षण और बढ़ता है और उनकी सुन्दरता का विकास होता है। यदि सभी फूल और पौधे, पत्तियाँ और बहार, फल और टहनियाँ तथा बगीचे के सारे पेड़-पौधे एक ही रंग-रूप के होते तो यह देखने में कितना बुरा लगता! रंग, रूप और आकार की विविधता बगीचे को समृद्ध और सुन्दर बनाती है, और उसके प्रभाव को बढ़ाती है। इसी तरह, जब अलग-अलग प्रकार के विचार, स्वभाव और चरित्र एक केन्द्रीय कारक की शक्ति और प्रभावशीलता के दायरे में लाए जाएँगे तो मानवीय पूर्णता की गरिमा और सुन्दरता प्रकट होकर अपनी झलक दिखाएगी। सभी वस्तुओं के यथार्थ पर शासन करने वाली और उन सबसे श्रेष्ठ 'ईश्वर की वाणी' की स्वर्गिक शक्ति के सिवा और कुछ भी नहीं है जो मानव-पुत्रों के इन विभिन्न विचारों, भावनाओं, संकल्पनाओं और धारणाओं को एक लय में ढाल सके।

6. अतः, समस्त अमेरिकी गणराज्यों में, दिव्य शक्ति के सहारे, ईश्वर के धर्मानुयायियों को चाहिए कि वे स्वर्गिक शिक्षाओं के विकास और मानवजाति की एकता के कारक बनें। अमेरिका के सभी भूभागों के ऊपर जीवन की साँस फूँकते हुए, सभी महत्वपूर्ण जनों को उठ खड़ा होना चाहिए - लोगों में एक नई चेतना का संचार करते हुए, ईश्वरीय प्रेम की अग्नि, जीवन के जल और पवित्र चेतना की

साँसों से सबका पवित्रीकरण करते हुए - ताकि लोगों का दूसरा जन्म हो सके। क्योंकि ईशवाणी (गॉस्पेल) में कहा गया हैः "वह जो हाड़-मांस से जन्मा है, हाड़-मांस है और वह जो 'चेतना' से उत्पन्न हुआ है, चेतना है।"[22]

7. अतः, हे अमेरिका और कनाडा में रहने वाले ईश्वर के निष्ठावानों! आप महत्वपूर्ण लोगों का चयन करें, या वे स्वयं ही इस संसार के आराम और सुख-शांति की आसक्ति त्याग कर उठ खड़े हों और सम्पूर्ण अलास्का, मैक्सिको गणराज्य और मध्य अमेरिकी गणराज्यों में मैक्सिको के दक्षिण की और जैसे कि ग्वाटेमाला, होंडरास, सैल्वाडोर, निकारागुआ, कोस्टा रिका, पनामा और बेलिज़ और महान दक्षिणी अमेरिकी गणराज्यों जैसे कि अर्जेंटीना, उरुग्वे, पैराग्वे, ब्राजील, फ्रेंच गायना, डच गायना, ब्रिटिश गायना, वेनेजुएला, एक्वाडोर, पेरू, बोलिविया और चिली और साथ ही वेस्ट इंडीज द्वीपों जैसे क्यूबा, हाइती, पूर्टो रिको, जमैका और सेंट डॉमिनेगो, एवं लेसर ऐंटाइल्स के द्वीपसमूहों जैसे बहामा और बरमुडा द्वीप एवं उसी तरह पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण अमेरिका के द्वीपों जैसे कि त्रिनिदाद, फॉकलैंड द्वीपसमूह, गैलापैगोज द्वीपसमूह, जुआन फर्नांडिज और टोबैगो की यात्राएँ करें। आप खासतौर पर ब्राजील के पूर्वी समुद्र-तट पर बहिया शहर की यात्रा करें। चूँकि विगत समय में इस शहर का नाम 'बहिया' रखा गया अतः इसमें कोई संदेह नहीं कि ऐसा पवित्र चेतना की प्रेरणा से ही हुआ है।

8. अतः ईश्वर के निष्ठावानों को चाहिए कि वे पूर्ण प्रयास करें, इन सभी क्षेत्रों में दिव्य मधुरता का उद्घोष करें, स्वर्गिक शिक्षाओं का प्रसार करें और हर किसी के ऊपर अनन्त जीवन की चेतना का संचार करें ताकि ये गणराज्य 'सत्य के सूर्य' की प्रभाओं और प्रखरता से इतने प्रकाशित हो उठें कि वे अन्य सभी देशों की प्रशंसा के पात्र बन सकें। इसी तरह से, आपको पनामा गणराज्य पर बहुत ध्यान देना चाहिए क्योंकि पनामा नहर के माध्यम से इस बिंदु पर पूरब और पश्चिम का संगम होता है। साथ ही यह दो महासागरों के बीच भी स्थित है। भविष्य में यह स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण होगा। दिव्य शिक्षाओं की संस्थापना से वहाँ पूर्व और पश्चिम, उत्तर और दक्षिण की एकता स्थापित होगी।

9. अतः इरादे की पवित्रता आवश्यक है। प्रयास पुनीत और उच्च होने चाहिए ताकि आप मानव-जगत के हृदयों के बीच लगाव उत्पन्न कर सकें। दिव्य शिक्षाओं के

प्रसार के बिना, जो कि पवित्र धर्मों की आधारशिलाएँ हैं, इस भव्य लक्ष्य को साकार नहीं किया जा सकता।

10. यह विचार करें कि ईश्वर के धर्मों ने किस तरह मानवजाति की सेवा की! किस तरह 'टोराह' का धर्म इस्राइल राष्ट्र की गरिमा और प्रतिष्ठा तथा उसके विकास के लिए लाभदायक सिद्ध हुआ! किस तरह ईसा मसीह की पवित्र चेतना की साँसों ने विभिन्न समुदायों और लड़ते-झगडते परिवारों के बीच एकता और लगाव का सृजन किया। किस तरह महामहिम मुहम्मद की पवित्र शक्ति परस्पर संघर्षरत कबीलों एवं अरब प्रायद्वीप के विभिन्न देशों के बीच एकता और तालमेल उत्पन्न करने का माध्यम बनी - इस तरह कि एक हजार कबीले मिलकर एक कबीला बन गए, संघर्ष और मतभेद समाप्त हुए, वे सब एकजुट और एकमत होकर सभ्यता और संस्कृति के विकास के लिए प्रयासरत हुए और इस तरह घोर पतन की अवस्था से मुक्त होकर अनन्त गरिमा के वितान में उडान भर सके। क्या इस गोचर संसार में इससे भी बड़ा कोई एकताकारी केन्द्र पा सकना सम्भव है? इस दिव्य एकताकारी केन्द्र की तुलना में राष्ट्रीयता पर आधारित एकताकारी केन्द्र, देशभक्ति से पोषित एकताकारी केन्द्र, राजनीतिक एकताकारी केन्द्र एवं सांस्कृतिक तथा बौद्धिक एकताकारी केन्द्र बच्चों के खेल ही तो प्रतीत होते हैं!

11. अब आप यह प्रयास करें कि पवित्र धर्मों का एकताकारी केन्द्र - जिसके बीजारोपण के लिए ही सभी अवतारों को प्रकट किया गया था और जो दिव्य शिक्षाओं की चेतना के सिवा अन्य कुछ नहीं है - अमेरिका के सभी हिस्सों में फैलाया जा सके, ताकि आपमें से प्रत्येक सत्य के क्षितिज पर एक ध्रुवतारे की तरह चमक सके, दिव्य प्रकाश प्रकृति के अंधकार को विच्छिन्न कर सके, और मानव-जगत ज्ञान की चेतना से भर सके। यह एक अत्यंत महान कार्य है! यदि आप इस कार्य में सम्पुष्टि प्राप्त कर सकें तो यह दुनिया एक दूसरी ही दुनिया बन जाएगी, यह धरातल एक आनन्दमय स्वर्ग बन जाएगा और शाश्वत संस्थाओं की स्थापना होगी।

12. जो भी व्यक्ति विभिन्न प्रदेशों में शिक्षण के लिए यात्रा करे, पर्वत पर, मरुस्थल में, मैदानों और समुद्र में, इस प्रार्थना का पाठ करे:

13. हे ईश्वर, मेरे परमेश्वर! देखता है तू तेरे प्राणियों के सम्मुख मेरी दुर्बलता, दीनता और विनम्रता को, फिर भी मैंने तुझमें भरोसा किया है और तेरे सशक्त सेवकों के

बीच तेरी शक्ति और सामर्थ्य पर भरोसा रखते हुए, तेरी शिक्षाओं के प्रसार के लिए उठ खड़ा हुआ हूँ।

हे नाथ, मैं एक पंख टूटा पंछी हूँ और तेरे असीम अंतरिक्ष में उड़ान भरना चाहता हूँ और तेरे मंगल-विधान और तेरी कृपा, तेरे अनुग्रह और तेरी सहायता के अतिरिक्त मेरे लिए ऐसा करना कैसे सम्भव होगा!

हे प्रभो! मेरी निर्बलता पर दया कर और अपनी शक्ति से मुझे सबल बना। हे नाथ! मेरी असमर्थता पर दया कर और अपनी सामर्थ्य तथा भव्यता से मुझे सम्बल दे।

हे स्वामिन! यदि पावन चेतना के उच्छ्वास प्रत्येक दुर्बल प्राणी को सम्पुष्टि दें तो वह अपनी सभी आकांक्षाओं को पा ले और जिस वस्तु की भी कामना हो उसका स्वामी बन जाए। तूने विगत काल में भी अपने सेवकों को सहारा दिया है, चाहे वे सभी प्राणियों में दुर्बलतम रहे हों, तेरे सेवकों में दीनतम रहे हों, तेरी स्वीकृति और तेरी अंतःसामर्थ्य के द्वारा उन्होंने तेरे जनों में सबसे अधिक महिमावान जनों और मानवजाति के सबसे उदात्त मनुष्यों पर भी श्रेष्ठता प्राप्त की है। पहले वे पतंगों जैसे थे, वे शाही बाज बन गए, पहले वे छोटी-सी जलधाराओं जैसे थे, तेरी दया के वरदानों से वे समुद्र जैसे बन गए, तेरे परम महान अनुग्रह से वे मार्गदर्शन के क्षितिज पर जगमगाते सितारे बन गए, अमरता की गुलाब-वाटिका में सुमधुर गान करते पंछी बन गए, ज्ञान और प्रज्ञा के महावनों में दहाड़ते सिंह बन गए, और जीवन के महासागरों में तैरते महामत्स्य बन गए।

निश्चय ही तू क्षमादाता, शक्तिशाली, सामर्थ्यमय और दयामयों में सर्वाधिक दयामय है।

टिप्पणियां

1. कुरान 225
2. मार्क 16:15
3. कुरान 2:261
4. कुरान 1:6,
5. मार्क 16:15
6. मेथ्यू 13:23
7. कुरान 2:57
8. मार्क 16:15
9. कुरान 39:69
10. मार्क 16:15
11. मैथ्यू 5:3
12. कुरान 28:5
13. मैथ्यू 10:14
14. कुरान 24:35
15. कुरान 1:6
16. कुरान 2:105, 3:74
17. कुरान 38:15
18. कुरान 30:9, 40:82, 47:10
19. कुरान 30:50
20. कुरान 67:3
21. कुरान 3:103
22. जॉन, 3:6